MagBook

arihant

सिविल सेवा (प्रारम्भिक) परीक्षा, राज्य लोक सेवा आयोग तथा
अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अति आवश्यक

भारतीय अर्थव्यवस्था

NCERT पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण तथ्यों
का कवरेज (कक्षा 6 से 12)

सम्पूर्ण पाठ्यक्रम एवं पूर्व परीक्षा
के प्रश्नों की TOPICWISE
कवरेज 3000+ MCQs एवं
5 प्रैक्टिस सेट्स सहित

MagBook

सिविल सेवा (प्रारम्भिक) परीक्षा, राज्य लोक सेवा आयोग तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अति आवश्यक

भारतीय अर्थव्यवस्था

NCERT पुस्तकों के महत्त्वपूर्ण तथ्यों का कवरेज (कक्षा 6 से 12)

लेखक
राकेश कुमार रोशन

arihant
अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

arihant

अरिहन्त पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

सर्वाधिकार सुरक्षित

© प्रकाशक

इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके—इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना वितरण नहीं किया जा सकता है। 'अरिहन्त' ने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए प्रकाशक, संपादक, लेखक अथवा मुद्रक जिम्मेदार नहीं हैं।

सभी प्रतिवाद का न्यायिक क्षेत्र 'मेरठ' होगा।

रजि. कार्यालय

'रामछाया' 4577/15, अग्रवाल रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली- 110002
फोन: 011-47630600, 43518550

मुख्य कार्यालय

कालिन्दी, टी०पी० नगर, मेरठ (यूपी)– 250002, **फोन:** 0121-7156203, 7156204

शाखा कार्यालय

आगरा, अहमदाबाद, बरेली, बंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी,
हैदराबाद, जयपुर, झाँसी, कोलकाता, लखनऊ, नागपुर तथा पुणे

ISBN : 978-93-25797-23-9

:

Published by Arihant Publications (India) Ltd.

PO No : TXT-XX-XXXXXXX-X-XX

प्रोडक्शन टीम

पब्लिशिंग मैनेजर	:	अमित वर्मा	इनर डिज़ाइनर	:	अंकित सैनी
प्रोजेक्ट हैड	:	करिश्मा यादव	पेज लेआउट	:	जितेन्द्र कुमार, दीपक कुमार
प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर	:	मनीष	प्रूफ रीडर	:	प्रभा गुप्ता, प्राची मित्तल
कवर डिज़ाइनर	:	शानू मंसूरी			

'अरिहन्त' की पुस्तकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी
वेबसाइट **www.arihantbooks.com** पर लॉग इन करें या **info@arihantbooks.com** पर संपर्क करें।

Follow us on

विषय-सूची

1. **भारतीय अर्थव्यवस्था : एक परिचय** 1-4
अर्थशास्त्र की शाखाएँ
अर्थव्यवस्था का व्यावहारिक पक्ष
विश्व की अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण
भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार

2. **आर्थिक संवृद्धि एवं विकास** 5-10
आर्थिक संवृद्धि
आर्थिक विकास
आर्थिक विकास के प्रमुख संकेतक
जीवन का भौतिक गुणवत्ता सूचकांक
हैप्पी प्लैनेट इण्डेक्स
सहस्त्राब्दि विकास लक्षण रिपोर्ट, 2015

3. **राष्ट्रीय आय** 11-18
राष्ट्रीय आय का अर्थ
राष्ट्रीय आय को मापने की विधियाँ
भारत में राष्ट्रीय आय की गणना
भारत में राष्ट्रीय आय का वितरण
भारत में राष्ट्रीय आय के आकलन की सीमाएँ

4. **भारत में आर्थिक नियोजन** 19-27
आर्थिक नियोजन : एक परिचय
नियोजन के प्रकार
योजना आयोग
नीति आयोग
15 साल का विजन डॉक्यूमेंट
तीन वर्षीय एक्शन एजेंडा (2017-18 से 2019-20)
भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ

5. **मुद्रा एवं बैंकिंग** 28-43
मुद्रा
मुद्रास्फीति
बैंक : अर्थ एवं परिभाषा
भारतीय बैंकिंग प्रणाली
बैंकों का राष्ट्रीयकरण
वाणिज्यिक बैंक
बैंकिंग क्षेत्र सुधार समितियाँ एवं योजनाएँ
बासेल मानक
स्वर्ण मौद्रीकरण योजना

6. **भारतीय वित्तीय संस्थाएँ** 44-51
वित्त
क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
औद्योगिक बैंक के संस्थागत स्रोत
कृषि वित्त के संस्थागत स्रोत
औद्योगिक बैंक के संस्थागत स्रोत
भारत में गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियाँ
माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेन्ट रिफाइनेन्स एजेन्सी (मुद्रा) बैंक

7. **भारतीय वित्तीय बाजार** 52-62
भारतीय मुद्रा बाजार
भारतीय पूँजी बाजार
भारत के महत्त्वपूर्ण शेयर बाजार
वित्तीय स्थिरता एवं विकास परिषद्
निक्षेप-निधि प्रणाली
क्रेडिट रेटिंग
राजीव गाँधी इक्विटी योजना
पारस्परिक कोष
भारतीय प्रतिभूति व विनिमय बोर्ड (SEBI)
भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI)
बीमा कानून (संशोधन) विधेयक, 2015

8. **लोकवित्त** 63-69
लोकवित्त का अर्थ
लोकवित्त का विभाजन
राजकोषीय नीति
वित्त आयोग

9. **भारतीय कर प्रणाली** 70-77
कर
विभिन्न प्रकार की कर प्रणाली
भारत में कर प्रस्ताव
केन्द्र-राज्य के बीच वित्तीय सम्बन्ध
कर सुधार सम्बन्धी समितियाँ
काला धन

10. **सार्वजनिक बजट** 78-83
सार्वजनिक बजट
बजट के प्रकार
भारत का बजटीय इतिहास
बजट निर्माण प्रक्रिया
वित्त घाटे के प्रकार

11. **कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र** 84-99
भारतीय कृषि : एक परिचय
कृषि जोत
कृषि-निविष्टियाँ

कृषि साख
कृषि विपणन
कृषि में आयात–निर्यात
विश्व व्यापार संगठन और कृषि
कृषि से सम्बन्धित राष्ट्रीय योजनाएँ
कृषि प्रौद्योगिकी व अनुसन्धान से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ
कृषि से सम्बन्धित अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रक
कृषि व सम्बद्ध क्षेत्रों में क्रान्तियाँ
पंचवर्षीय योजनाएँ एवं भारतीय कृषि क्षेत्र
कृषि से सम्बन्धित नीतियाँ एवं आयोग

12. **भारतीय औद्योगिक क्षेत्रक** 100-115
औद्योगिक विकास
औद्योगिक नीति
नई विनिर्माण नीति, 2011
औद्योगिक नवीकरण : बौद्धिक सम्पदा अधिकार
भारत के प्रमुख भारी उद्योग
औद्योगिक रुग्णता (Industrial Sickness)
महारत्न योजना
नवरत्न योजना
मिनीरत्न योजना

13. **भारत में सेवा क्षेत्रक** 116-120
सेवा क्षेत्र से आशय
भारत में सेवा नियोजन
कुछ महत्त्वपूर्ण योजनाएँ

14. **भुगतान सन्तुलन एवं विदेशी निवेश** 121-128
भुगतान सन्तुलन
भुगतान सन्तुलन और भारत
विदेशी निवेश
FDI और FII पर मायाराम समिति की रिपोर्ट
अरविन्द मायाराम समिति

15. **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार** 129-135
भारत के विदेशी व्यापार की स्थिति
विदेशी व्यापार की संरचना
निर्यात संवर्द्धन

16. **अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठन** 136-146
अन्तर्राष्ट्रीय संगठन
विश्व बैंक
भारत की महत्त्वपूर्ण भूमिका वाले संगठन
ब्रिक्स (BRICS) सम्मेलन
क्षेत्रीय आर्थिक संगठन

17. **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार समझौते** 147-152
क्षेत्रीय समझौते
भारत और क्षेत्रीय व्यापार समझौता
विश्व व्यापार संगठन

18. **जनांकिकी एवं जनगणना** 153-160
जनांकिकी
भारत में जनगणना
राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग

19. **निर्धनता एवं बेरोजगारी** 161-168
निर्धनता
भारत में निर्धनता की माप
बेरोजगारी
कार्यक्रम एवं योजनाएँ

20. **सामाजिक कार्यक्रम एवं योजनाएँ** 169-175
नई समाज कल्याण योजनाएँ/कार्यक्रम
प्रधानमन्त्री जन सुरक्षा योजना
मेक इन इण्डिया
स्वास्थ्य योजनाएँ

21. **ग्रामीण विकास** 176-183
ग्रामीण विकास की अवधारणा
ग्रामीण विकास योजनाएँ
जलापूर्ति सम्बन्धित योजनाएँ
मिशन इन्द्रधनुष
ग्रामीण विकास से जुड़ी संस्थाएँ

22. **सतत् विकास** 184-188
सतत् विकास
पर्यावरण एवं आर्थिक संवृद्धि
सतत् विकास : आवश्यक दशाएँ एवं रणनीति
सतत् विकास हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरण
भारत एवं सतत् विकास
12वीं पंचवर्षीय योजना (2012-17) एवं सतत् विकास

- **आर्थिक समीक्षा** 2020-21 189-190
- **आम बजट** 2020-21 191-195
- **समिति/आयोग** 196
- **आर्थिक शब्दावली** 197-203
- **आर्थिक संकेताक्षर** 204-208
- **प्रैक्टिस सेट्स** (1-5) 209-233
- **विगत वर्षों के प्रश्न–सॉल्वड पेपर** (सेट 1) 234-254
- **विगत वर्षों के प्रश्न–सॉल्वड पेपर** (सेट 2) 255-264

प्रश्नों की प्रवृत्ति एवं फोकस टॉपिक्स

भारतीय अर्थव्यवस्था : एक परिचय एवं राष्ट्रीय आय

यह अध्याय भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न आर्थिक क्षेत्रकों एवं उनके विशिष्ट लक्षणों का एक सामान्य परिचय प्रदान करता है। आर्थिक वृद्धि के मापकों के रूप में सकल घरेलू उत्पाद, सकल राष्ट्रीय उत्पादन, सकल घरेलू उत्पाद के अवमूल्यन के कारक एवं ऐसी ही अन्य सांख्यिकी इकाइयों की अवधारणा की समझ इस अध्याय में महत्त्वपूर्ण है।

यूपीएससी परीक्षा के बदलते पैटर्न के अनुरूप इन सभी अवधारणाओं के अर्थ एवं उनकी गहरी समझ को समझना अनिवार्य है एवं उनकी गणना की विधियाँ जिनसे गत वर्षों में प्रश्न पूछे जाते रहे हैं।

आर्थिक संवृद्धि एवं विकास

यह अध्याय महत्त्वपूर्ण अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण एवं सापेक्ष विषयों और अवधारणाओं जैसे संवृद्धि और विकास को कवर करता है। इसके अलावा इस अध्याय में अन्य महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स हैं– वृद्धि एवं विकास में अन्तर, विकास के विविध मापक, मानव विकास एवं मानव विकास सूचकांक, धारणीय (सम्पोषणीय) विकास, सहस्राब्दि विकास लक्ष्य आदि विगत वर्षों में प्रतियोगी परीक्षाओं में इस खण्ड से पूछे जाने वाले अधिकांश प्रश्न आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक, मानव विकास सूचकांक के मापक आदि से आते हैं।

राष्ट्रीय आय

यह अध्याय परीक्षा के दृष्टिकोण से अति महत्त्वपूर्ण हैं। इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स राष्ट्रीय आय की अवधारणाएँ, सकल घरेलू उत्पाद, सकल राष्ट्रीय उत्पाद, भारत में राष्ट्रीय आय की गणना, भारत में राष्ट्रीय आय की प्रवृत्तियाँ, राष्ट्रीय आय का वितरण आदि हैं।
पूर्व वर्ष में इस अध्याय से राष्ट्रीय आय की अवधारणा, भारत की प्रति व्यक्ति वास्तविक आय, भारत में बचत अनुपात, जीडीपी, आदि से प्रश्न पूछे गए हैं।

जनांकिकी एवं जनगणना

जनांकिकी लाभांश के सन्दर्भ में यह अध्याय बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स हैं–जनांकिकी संक्रमण सिद्धान्त, जन्म एवं मृत्यु दर, आयु संरचना, जनसंख्या घनत्व, लिंगानुपात एवं साक्षरता आदि। इसके अतिरिक्त जनगणना आँकड़ों, जनसंख्या नीति एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम से भी प्रश्न पूछे जाते हैं। इस अध्याय से विगत वर्षों में प्रश्न जनांकिकी लाभांश, भारत की आयु संरचना आदि पूछे गए हैं।

भारत में आर्थिक नियोजन

यह अध्याय आर्थिक नियोजन के अर्थ, उद्भव एवं रणनीतियों की व्याख्या करता है। परीक्षा की दृष्टि से इस खण्ड के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स योजना आयोग की भूमिका एवं राष्ट्रीय विकास परिषद् के कार्य, विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्य एवं उपलब्धियाँ एवं उदारीकृत अर्थव्यवस्था में आयोजना आदि हैं।

मुद्रा, बैंकिंग एवं पूँजी बाजार

यह अध्याय अर्थव्यवस्था का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण टॉपिक है। परीक्षा के बदले हुए पैटर्न में इस खण्ड के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स मुद्रा एवं पूँजी बाजार एवं (मुद्रास्फीति, अवस्फीति) इसमें सुधार हेतु किए गए कार्य, भारत में बैंकिंग, मौद्रिक नीति एवं भारतीय रिजर्व बैंक, ब्याज दर और मुद्रा आपूर्ति, बीमा एवं पेंशन क्षेत्र हैं। परीक्षाओं में अधिकांश प्रश्न रिजर्व बैंक की नियामकीय भूमिका, रेपो और रिवर्स रेपो दर, पूँजी तरलता आदि से पूछे जाते हैं।

निर्धनता एवं बेरोजगारी

इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स सापेक्ष एवं निरपेक्ष निर्धनता की अवधारणा, निर्धनता की गणना की विधियाँ, विभिन्न समितियाँ एवं उनकी संस्तुतियाँ, निर्धनता उन्मूलन योजनाएँ, बेरोजगारी के प्रकार एवं बेरोजगारी की गणना की विधियाँ, मनरेगा एवं अन्य रोजगार निर्माण योजनाएँ आदि हैं।

भारतीय वित्तीय संस्थान

परीक्षा के दृष्टिकोण से इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक लिमिटेड, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, भारतीय आयात–निर्यात बैंक इत्यादि हैं। पूर्व वर्ष के प्रश्न–पत्र में इस अध्याय से अधिकांश प्रश्न–पत्र में इस अध्याय से अधिकांश प्रश्न क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं नाबार्ड से पूछे गए हैं।

लोकवित्त

इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स राजकोषीय नीति, लोकवित्त से आय और व्यय और उसकी प्रवृत्तियाँ, कराधान नीति, वस्तु एवं सेवाकर (जी एस टी), राजकोषीय घाटा एवं इसे कम करने के उपाय, एफआरबीएम एक्ट हैं।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्न इस अध्याय से उपरोक्त टॉपिक्स की अवधारणात्मक समझ से सम्बन्धित होते हैं, एवं इसके अतिरिक्त घाटे की वित्त व्यवस्था के प्रभाव, राजकोषीय घाटे को कम करने के उपाय आदि से पूछे जाते हैं।

भारत में सेवा क्षेत्रक

इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स हैं–भारत के विभिन्न सेवा क्षेत्रकों जैसे–सूचना प्रौद्योगिकी, संचार प्रौद्योगिकी, भवन निर्माण, संचार, विनिर्माण, पर्यटन क्षेत्र आदि में रुझान एवं निष्पादन आदि। विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का मसला एवं सेवा क्षेत्रक का उदारीकरण तथा भारत में सेवा क्षेत्रक रोजगार आदि। इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण रोजगार आदि। इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स सकल घरेलू उत्पाद में सेवाओं का हिस्सा, भारत में सेवा नियोजन, सेवा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश इत्यादि हैं।

कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र

भारतीय अर्थव्यवस्था का यह एक महत्त्वपूर्ण खण्ड है। महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स जो इस अध्याय में पढ़ने हैं, वे हैं–कृषि एवं कृषि के प्रकार, द्वितीय हरित क्रान्ति, कृषि मूल्य नीति, वित्त एवं मार्केटिंग, कृषि ऋण, उत्पादकता और भूमि सुधार में समस्याएँ, खाद्य प्रसंस्करण और सम्बन्धित योजनाएँ आदि।

भारतीय औद्योगिक क्षेत्रक

यह अध्याय परीक्षा के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, जिसमें औद्योगीकरण, सकल घरेलू उत्पाद में उद्योगों का योगदान, विभिन्न औद्योगिक नीति, औद्योगिक नवीकरण: बौद्धिक सम्पदा अधिकार, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग से सम्बन्धित बोर्ड, केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम आदि हैं। पूर्व के वर्षों में राष्ट्रीय नवीकरण, लघु एवं कुटीर उद्योग, सार्वजनिक क्षेत्र में आधारभूत एवं भारी उद्योग आदि से प्रश्न पूछे गए हैं।

ग्रामीण विकास

इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स ग्रामीण विकास की अवधारणा, ग्रामीण विकास योजनाएँ, रोजगार सृजन कार्यक्रम, ग्रामीण विकास से जुड़ी संस्थाएँ हैं। पूर्व वर्ष में सार्वजनिक वितरण प्रणाली, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन, भारत निर्माण कार्यक्रम, आदि से प्रश्न पूछे गए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, भुगतान सन्तुलन एवं विदेशी निवेश

यह अध्याय भारत के बाह्य क्षेत्रक से सम्बन्धित है। इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स भुगतान सन्तुलन का अर्थ एवं महत्त्वपूर्ण घटक, चालू खाता और पूँजी खाता परिवर्तनीयता, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश और विदेशी संस्थागत निवेश, विदेशी मुद्रा बाजार में भारतीय रुपये का मूल्य, फेमा एवं विदेशी व्यापार नीति हैं। पूर्व वर्षों में इस अध्याय से अधिकांश प्रश्न भुगतान सन्तुलन के घटक, मुद्रा अवमूल्यन आदि से पूछे गए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठन एवं क्षेत्रीय व्यापार समझौते

यह अध्याय विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठनों जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन, एशिया विकास बैंक आदि की संरचना, कार्य आदि को समझाता है। इस अध्याय से प्रश्न अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की नीति, ऋण नीति WTO के कृषि पर समझौते एवं नॉन–एग्रीकल्चर मार्केट एक्सेस आदि से पूछे जाते हैं।

बजट एवं भारतीय कर प्रणाली

परीक्षा की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है, इस अध्याय में महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स वित्त आयोग एवं बजट के विभिन्न प्रकार जैसे जेण्डर बजट, आउटकम एवं परफॉर्मेंस बजट आदि हैं। विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्न इस अध्याय से इन टॉपिक्स की अवधारणात्मक समझ से सम्बन्धित होते हैं, एवं इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के बजट एवं उनके प्रकार एवं भारतीय कर प्रणाली आदि से सम्बन्धित पूछे जाते हैं।

समावेशी विकास एवं ग्रामीण विकास

यह अध्याय अर्थव्यवस्था खण्ड में हाल में जुड़ा है एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में पर्याप्त महत्त्व भी दिया जा रहा है। इस अध्याय के महत्त्वपूर्ण टॉपिक्स समावेशी विकास की अवधारणा, आवश्यकता और रणनीति से सम्बन्धित हैं एवं महत्त्वपूर्ण सरकारी नीतियाँ एवं योजनाएँ जो स्वास्थ्य, शिक्षा, क्षमता, विकास, ग्रामीण विकास, महिला एवं बाल विकास आदि से सम्बन्धित हैं, जो परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

अध्याय एक
भारतीय अर्थव्यवस्था : एक परिचय

''भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है, जिसमें सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र मिल-जुलकर कार्य करते हैं। पिछले दशक के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था की विशिष्ट पहचान बनी है, जिसका संकेत 'तेजी से उभर रही अर्थव्यवस्था' संज्ञा से मिलता है। वैश्विक स्तर पर भारतीय अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्थान है और देश के मानवीय संसाधन को रोजगार उपलब्ध कराने, विकासपरक कार्यों के सम्पादन और उत्पादन गतिविधियों के सफल क्रियान्वयन के माध्यम से निरन्तर अग्रसर है।''

- अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान की एक शाखा है जिसके अन्तर्गत उत्पादन, उपभोग, विनिमय तथा वितरण का अध्ययन किया जाता था, परन्तु आधुनिक अर्थशास्त्र में कई नई व्याख्याएँ जुड़ गई हैं जिसमें राजस्व, जनकल्याण, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेशी विनियम, बैंकिंग इत्यादि का अध्ययन प्रमुख है। 'अर्थशास्त्र का जनक' एडम स्मिथ (1723-1790) को कहा जाता है।
- अर्थशास्त्र अंग्रेजी शब्द 'इकोनॉमिक्स' (Economics) का हिन्दी रूपान्तरण है। 'इकोनॉमिक्स' शब्द ग्रीक भाषा के 'ओकोनोमिया' (Oikonomia) शब्द से उत्पन्न हुआ है। ओकोनोमिया शब्द 'ओकोस' (Oikos) तथा 'नोमोस' (Nomos) से मिलकर बना है। ओकोस का शाब्दिक अर्थ—'आवास' है तथा नोमोस का शाब्दिक अर्थ 'कानून' है।
- अर्थशास्त्र में मनुष्य, अपने सीमित स्रोतों से चुनाव द्वारा धन का विभाजन करके अपने असीमित इच्छाओं की पूर्ति से सन्तुष्ट होने के विषय सम्बन्धी अध्ययन करते हैं। इच्छाओं की पूर्ति के लिए लोग क्रियाओं में व्यस्त रहते हैं, *ये दो प्रकार की क्रियाएँ हैं*
  1. **आर्थिक क्रियाएँ** इसके अन्तर्गत व्यक्ति का उद्देश्य धन की प्राप्ति करना होता है; जैसे—चिकित्सक, शिक्षक, व्यापारी आदि।
  2. **अनार्थिक क्रियाएँ** इसमें धन प्राप्त करना उद्देश्य नहीं होता है; जैसे—सामाजिक क्रियाएँ, धार्मिक क्रियाएँ आदि।
- यह विषय ऐसे सिद्धान्तों, नियमों तथा संकल्पनाओं की व्याख्या करता है, जो बाजार की कार्य प्रणाली समझने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त समुदायों के मध्य सम्पत्तियों के निर्माण तथा वितरण को भी समझने का प्रयास करता है।

अर्थशास्त्र की शाखाएँ

परम्परागत रूप से अर्थशास्त्र को निम्नलिखित दो शाखाओं में विभाजित किया गया है

समष्टि अर्थशास्त्र

- समष्टि अर्थशास्त्र वह अर्थशास्त्र है, जिसमें क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं की अन्तर्निर्भरता तथा अन्योन्याश्रितता समझने का प्रयास किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें राष्ट्रीय आय, बचत, व्यापार की व्याख्या करते हुए राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लक्ष्यों का निर्धारण तथा प्राप्ति के प्रयास भी सम्मिलित हैं।
- राष्ट्रीय आय, रोजगार, मुद्रा, सामान्य कीमत, आर्थिक-विकास व अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से सम्बन्धित सिद्धान्तों का अध्ययन समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत ही किया जाता है।
- समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थव्यवस्था की समग्र रूप से व्याख्या करने का प्रयास करता है। यह बेरोजगारी, मुद्रास्फीति, मुद्रा तथा राजकोषीय नीति जैसे विषयों की व्याख्या के द्वारा इन तत्त्वों का अर्थव्यवस्था के सन्तुलन से सम्बन्ध स्थापित करता है।
- एम एच स्पेन्सर के अनुसार, ''समष्टि अर्थशास्त्र का सम्बन्ध सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था अथवा उसके बड़े-बड़े खण्डों से है। इसके अन्तर्गत ऐसी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है; जैसे—बेरोजगारी का स्तर, मुद्रा स्फीर्ति की दर, राष्ट्र का कुल उत्पाद आदि जिनका सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए महत्त्व होता है।''
- अर्थशास्त्र की एक अलग शाखा के रूप में समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics) को आरम्भ करने का श्रेय ब्रिटिश अर्थशास्त्री **जॉन मेनार्ड कीन्स** को जाता है, जब उन्होंने अपनी पुस्तक 'थ्योरी ऑफ एम्प्लॉयमेण्ट इण्टरेस्ट एण्ड मनी' में 1930 के दशक की मन्दी के उपचार का सुझाव दिया तथा कहा कि मन्दी की समस्या का समाधान समष्टि अर्थव्यवस्था में छिपा है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र

- व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics) के अन्तर्गत सामान्यत: आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है।
- व्यष्टिगत अर्थशास्त्र के अन्तर्गत छोटी आर्थिक इकाइयों से सम्बन्धित आर्थिक समस्याओं एवं आर्थिक मुद्दों का अध्ययन किया जाता है; जैसे—एक व्यक्तिगत उपभोक्ता इत्यादि।
- व्यष्टि अर्थव्यवस्था आर्थिक मानव के व्यक्तिगत व्यवहार का अध्ययन करती है। आर्थिक मानव की आवश्यकताएँ, उत्पाद को प्रेरित करने वाले तत्त्वों, बाजार से उसके सम्बन्ध का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है, साथ ही उद्यमी व उपभोक्ता से सम्बन्धी माँग व आपूर्ति के नियमों का विश्लेषण भी व्यष्टि अर्थशास्त्र से सम्बन्धित विषय हैं। व्यष्टि अर्थशास्त्र का उद्देश्य बाजार में माँग व आपूर्ति की व्यवस्था को बनाए रखना तथा उपभोग और माँग के अन्य तत्त्वों की पहचान करना है।
- माँग, उत्पादन व कीमत निर्धारण से सम्बन्धित सिद्धान्तों का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

अर्थव्यवस्था का व्यावहारिक पक्ष

- अर्थव्यवस्था अर्थशास्त्र का व्यावहारिक पक्ष है। अर्थव्यवस्था वह व्यवस्था या प्रबन्ध है जिसके द्वारा एक निश्चित क्षेत्र या देश में रहने वाले लोग अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं।
- अर्थव्यवस्था वह प्रणाली है, जो एक ओर उस विशेष क्षेत्र में व्याप्त है, जिससे उस क्षेत्र में होने वाली आर्थिक क्रियाओं की प्रकृति एवं स्तर प्रकट होता है कि रक्त सम्बन्धित क्षेत्र के लोग कैसे अपनी आजीविका कमाते हैं?
- किसी अर्थव्यवस्था (देश/राष्ट्र) के संसाधनों का उसके लोगों की उत्कृष्ट खुशहाली के लिए किस प्रकार से उपयोग या दोहन किया जाए। इस विवाद का प्रारम्भ एड्म स्मिथ की पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स (1776) से माना जाता है।
- अर्थव्यवस्था (Economy) सामान्यत: विभिन्न आर्थिक क्रियाओं व गतिविधियों को अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत रखा जाता है और इन गतिविधियों के आधार पर अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण किया जाता है।

अर्थव्यवस्था के प्रकार

विकास के स्तर, विकास के तरीकों के आधार पर अर्थव्यवस्था को *निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है*

उदारवादी अर्थव्यवस्था

- उदारवादी अर्थव्यवस्था (Liberal Economy) ऐसी अर्थव्यवस्था है, जहाँ आर्थिक गतिविधियों पर राज्य का न्यूनतम नियन्त्रण होता है तथा निजी क्षेत्र अधिक प्रभावकारी एवं स्वतन्त्र होता है।
- यह अर्थव्यवस्था एड्म स्मिथ के 'लेसजफेयर' (Laissezfair) या अहस्तक्षेप के सिद्धान्तों पर कार्य करती है। इसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalistic Economy) भी कहते हैं। इसमें बाजार की शक्तियाँ अधिक प्रभावकारी भूमिका में होती हैं; जैसे—यूएसए, ब्रिटेन, फ्रांस की अर्थव्यवस्थाएँ।

समाजवादी अर्थव्यवस्था

- समाजवादी अर्थव्यवस्था (Socialist Economy) राज्य की महत्त्वपूर्ण शक्ति होती है, जो राज्य की समस्त आर्थिक गतिविधियों को नियन्त्रित तथा निर्देशित करती है। यह उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व की संकल्पना को लेकर चलती है तथा इसमें बाजारी शक्तियाँ नियन्त्रित रहती हैं; जैसे— भूतपूर्व सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था।

मिश्रित अर्थव्यवस्था

- मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy) में समाजवादी तथा उदारवादी दोनों प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं की विशेषताएँ निहित होती हैं। इसमें निजी तथा सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों का योगदान होता है। निजी क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र का सहायक होता है; जैसे—भारत की अर्थव्यवस्था।

खुली एवं बन्द अर्थव्यवस्था

वे अर्थव्यवस्थाएँ जिसमें उदारवादी तथा निजी आर्थिक तत्त्वों की प्रभाविकता रहती है तथा आयात-निर्यात पर न्यूनतम प्रतिबन्ध रहते हैं, उन्हें खुली अर्थव्यवस्था कहते हैं; जैसे– हाँगकाँग, सिंगापुर। वे अर्थव्यवस्था जो बाह्य अर्थव्यवस्थाओं से किसी भी प्रकार से सम्बन्ध नहीं रखती हैं अर्थात् आयात-निर्यात की गतिविधियाँ शून्य होती हैं तथा निजी क्षेत्र की भूमिका नगण्य होती है, उन्हें बन्द अर्थव्यवस्था कहते हैं; जैसे– उत्तरी कोरिया।

विश्व की अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण

- प्रति वर्ष जुलाई में विश्व-बैंक, विश्व की अर्थव्यवस्थाओं का वर्गीकरण करता है, जिसका आधार प्रतिव्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय होता है। विश्व बैंक द्वारा प्रस्तुत वैश्विक अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण *निम्नलिखित हैं*

—निम्न आय वर्ग	$ 1046 या उससे कम
—निम्न मध्यम आय वर्ग	$ 1046 – $4096
—उच्च मध्यम आय वर्ग	$ 4096 – $12,695
—उच्च आय वर्ग	$ 12,695 व उससे अधिक

- नए वर्गीकरण के अनुसार, विभिन्न देशों की स्थितियों में परिवर्तन आ गया है। नेपाल को कम आय वर्ग से निम्न मध्यम आय वर्ग में शामिल किया गया है। मॉरीशस को उच्च मध्यम आय वर्ग से उच्च आय वर्ग में शामिल किया गया है। श्रीलंका को उच्च मध्यम आय वर्ग से निम्न मध्यम आय वर्ग में शामिल किया गया है। वहीं इंडोनेशिया को निम्न मध्यम आय वर्ग से उच्च मध्यम आय वर्ग में शामिल किया गया है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

- सामान्यत: सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की आर्थिक गतिविधियों को लेखांकित करने के लिए इसे *तीन क्षेत्रकों (Sectors) में विभाजित किया जाता है*

प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector)

- इसे कृषि एवं सम्बद्ध गतिविधियों से सम्बन्धित क्षेत्र भी कहा जाता है।
- इसके अन्तर्गत अर्थव्यवस्था के प्राकृतिक क्षेत्रों का लेखांकन किया जाता है। इसके अन्तर्गत निम्न क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है;

जैसे—

—कृषि	—वानिकी
—पशुपालन	—मत्स्यन

—खनन (ऊर्ध्वाधर खुदाई) एवं उत्खनन (क्षैतिज खुदाई)

द्वितीयक क्षेत्र (Secondary Sector)

- इस क्षेत्र के अन्तर्गत मुख्यत: अर्थव्यवस्था की विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन का लेखांकन किया जाता है।
- निर्माण, जहाँ किसी स्थायी परिसम्पत्ति का निर्माण किया जाए; जैसे-भवन।
- विनिर्माण, जहाँ किसी वस्तु का उत्पादन हो; जैसे—कपड़ा, ब्रेड आदि।
- विद्युत, गैस एवं जलापूर्ति इत्यादि से सम्बन्धित कार्य।

तृतीयक या सेवा क्षेत्र (Tertiary Sector)

- यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था के प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र को अपनी उपयोगी सेवाएँ प्रदान करता है। *इसके अन्तर्गत आते हैं*

—परिवहन एवं संचार —बैंकिंग
—बीमा —भण्डारण
—व्यापार —सामुदायिक सेवाएँ आदि

अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्र

- **चतुर्धातुक क्षेत्र** (Quaternary Sector) अर्थव्यवस्था के इस क्षेत्र में बौद्धिक गतिविधियों को शामिल किया जाता है। इस क्षेत्र से सम्बन्धित गतिविधियों में शामिल हैं; जैसे—सरकार, संस्कृति, पुस्तकालय, अनुसन्धान, शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी।
- **पंचसंख्यक क्षेत्र** (Quinary Sector) समाज या अर्थव्यवस्था में उच्च-स्तर के निर्णय लेने वाले; जैसे— विश्वविद्यालय, मीडिया, विज्ञान, गैर-लाभ संस्थान आदि को शामिल किया जाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार

- भारतीय अर्थव्यवस्था विनिमय दर के आधार पर विश्व की छठी बड़ी तथा क्रय-शक्ति समता (Purchasing Power Parity, PPP) के आधार पर चीन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है।
- अंकटाड द्वारा जारी विश्व निवेश रिपोर्ट 2021 के अनुसार, भारत विश्व का 5वाँ बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्तकर्ता देश है। भारत में वर्ष 2020 में FDI $ 64 अरब हुआ है, जो 2019 से 27% अधिक है। इस रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2019 में FDI प्रवाह वाले प्रथम पाँच शीर्ष देश— अमेरिका, चीन, सिंगापुर, ब्राजील तथा ग्रेट ब्रिटेन था।

भारतीय अर्थव्यवस्था के लक्षण

- भारत एक निम्न मध्यम आय वाली विकासशील अर्थव्यवस्था का उदाहरण प्रस्तुत करता है, किन्तु सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में हो रही तेज वृद्धि के चलते यह आगामी कुछ वर्षों में मध्यम आय वाले देशों के वर्ग में प्रवेश कर जाएगा।

भारतीय अर्थव्यवस्था में विकासशील अर्थव्यवस्था के निम्न लक्षण पाए जाते हैं

—**प्रतिव्यक्ति आय का निम्न होना** वर्ष 2019 में भारत की प्रतिव्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय विश्व बैंक के अनुसार केवल $ 7034 (जीडीपी क्रय शक्ति समता के आधार पर) थी, जोकि बहुत ही कम है।

—**अधिकांश जनसंख्या का अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र में संलग्न होना** भारत की कुल कार्यकारी जनसंख्या का लगभग 48.9% कृषि कार्य में लगा हुआ था, जबकि राष्ट्रीय आय में इसका योगदान 17.4% था।

—**अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या का बढ़ता दबाव** वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या बढ़कर 1.21 अरब हो चुकी है। इतनी बड़ी जनसंख्या के जीवन-स्तर को बनाए रखने के लिए भोजन, वस्त्र, आवास, औषधि, शिक्षा की व्यवस्था करना एक बड़ी चुनौती है।

—**बेरोजगारी की समस्या** भारत लगातार बेरोजगारी और अल्परोजगार की समस्या से ग्रसित रहा है। यहाँ मात्रात्मक रोजगार के साथ-साथ गुणात्मक रोजगार की भी कमी रही है।

—**पर्याप्त पूँजी का अभाव** यहाँ प्रतिव्यक्ति उपलब्धता काफी कम है। निम्न आय वर्ग वाली जनसंख्या की अधिकता के कारण बचत दर भी काफी कम है। परिणामत: पूँजी निर्माण की प्रचलित दर भी निम्नतम है।

—**दोषपूर्ण सम्पत्ति वितरण** शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर परिसम्पत्तियों के वितरण में भारी असमानता है। शहरी परिवारों में भी परिसम्पत्ति के वितरण में काफी असमानता है।

—**मानव संसाधन की गुणवत्ता का निम्न होना** भारत को अपने मानव संसाधन पर बहुत अधिक निवेश करना पड़ता है। स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक सेवाओं व सामाजिक कल्याण पर अधिक व्यय के कारण आर्थिक विकास के लिए पूँजी का अभाव हो जाता है।

—**तकनीकी पिछड़ापन** अधिकांश औद्योगिक इकाइयों में अब भी घटिया तकनीक का प्रयोग हो रहा है। इसी प्रकार हरित-क्रान्ति का लाभ भी पूरे देश को प्राप्त नहीं हो सका है। परिणामत: अधिकांश राज्यों में कृषि एवं उद्योग अब भी पिछड़ी अवस्था में हैं।

—**अधिकांश जनसंख्या के जीवन-स्तर का निम्न होना** भारत में अधिकतर लोगों को प्रतिदिन सन्तुलित भोजन नहीं मिल पाता है। यहाँ लगभग 29.5% जनसंख्या अब भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन कर रही है। (रंगराजन समिति के अनुसार)।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रवृत्ति

- भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। भारत विश्व के बड़े राष्ट्रों में एक है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है और एशिया में चीन के बाद दूसरा।
- वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था अनेक महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तनों के साथ आर्थिक विकास एवं प्रगति की प्रक्रिया से गुजर रही है। इसे अर्थव्यवस्थाओं के आकार से आसानी से समझा जा सकता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति

- वर्ष 2017-18 में भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत तेजी से बढ़ रही थी, जिसने चीन को भी पीछे छोड़ दिया था, परन्तु वर्ष 2018-19, 2019-20 और 2020-21 में भारतीय अर्थव्यवस्था मन्द हो गई।
- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) के अनुसार 2020-21 में भारत की अर्थव्यवस्था –7.2% विकास दर हासिल कर पाई।
- राष्ट्रीय लेखा शृंखला के केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा बाजार वर्ष में परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए आर्थिक सर्वेक्षण में बताया गया है कि वर्ष 2017-18 के लिए विकास दर की वृद्धि 6.6% है, जबकि 2018-19 के लिए विकास दर 6.1% और 2019-20 में 4.2% था।
- केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत की प्रतिव्यक्ति आय वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान स्थिर मूल्य पर ₹ 85,929 आकलित की गई।

सेल्फ चैक

बढ़ाएँ आत्मविश्वास...

1. विश्व बैंक द्वारा विश्व की अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण का आधार क्या है?
(a) क्रय-शक्ति समता
(b) मानव संसाधन की गुणवत्ता
(c) प्रतिव्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय
(d) आयात-निर्यात पर न्यूनतम प्रतिबन्ध

2. जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था का विकास होता है, वैसे-वैसे GDP में तृतीय क्षेत्र का अंश **[UPPCS (Mains) 2006]**
(a) घटता है (b) घटता है फिर बढ़ता है
(c) बढ़ता है (d) स्थिर (constant) रहता है

3. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद को सर्वाधिक योगदान देता है? **[MPPCS 2008]**
(a) प्राथमिक क्षेत्र (b) द्वितीयक क्षेत्र
(c) तृतीयक क्षेत्र (d) ये सभी

4. मिश्रित अर्थव्यवस्था क्या है? **[UPPCS 1990]**
(a) सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र का सह-अस्तित्व
(b) सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा
(c) निजी क्षेत्र पर विशेष बल
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. बन्द अर्थव्यवस्था (Closed Economy) से आप क्या समझते हैं? **[UPPCS 1991]**
(a) निर्यात बन्द (b) आयात-निर्यात बन्द
(c) आयात बन्द (d) नियन्त्रित पूँजी

6. भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में निम्नलिखित गतिविधियों को अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए
1. कृषि वानिकी तथा मत्स्य पालन
2. विनिर्माण
3. व्यापार, होटल, परिवहन, संचार
4. वित्त, बीमा, रीयल एस्टेट, व्यापार-सेवा, साधन लागत पर स्थिर मूल्य, सकल घरेलू उत्पाद

कूट
(a) 3, 1, 2, 4 (b) 1, 3, 4, 2
(c) 3, 4, 1, 2 (d) 4, 3, 2, 1

7. भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए
1. कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था।
2. उन्नत एवं पूर्णतः विकसित प्राकृतिक संसाधन।
3. पूर्णतः विकसित आधारभूत संरचना।
4. राष्ट्रीय आय के वितरण में समानता।

उपरोक्त में से कौन-से लक्षण भारतीय अर्थव्यवस्था में नहीं पाए जाते हैं?
(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3
(c) 2, 3 और 4 (d) 2 और 4

8. निम्नलिखित में कौन-सा/से कथन अर्थव्यवस्था के विभिन्न स्वरूपों की सही व्याख्या करता है/हैं?
1. समाजवादी अर्थव्यवस्था में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की भूमिका होती है।
2. बाजारी अर्थव्यवस्था को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था भी कहते हैं।
3. केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रिया कलापों का निर्धारण केन्द्रीय सरकार द्वारा किया जाता है।

कूट
(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 2 और 3 (d) 1 और 3

9. भारत में तृतीयक क्षेत्र (Tertiary Sector) में सम्मिलित है **[UPPCS (Mains) 2004]**
1. व्यापार एवं परिवहन
2. वित्त एवं वास्तविक (स्थावर) सम्पदा
3. वानिकी और मत्स्यिकी

कूट
(a) केवल 1 (b) 1 और 2
(c) 2 और 3 (d) केवल 3

10. निम्नलिखित में से कौन-सा भारतीय अर्थव्यवस्था का लक्षण नहीं है?
(a) दोषपूर्ण सम्पत्ति विवरण (b) तकनीकी पिछड़ापन
(c) पर्याप्त पूँजी का होना (d) रोजगार की समस्या

11. विश्व की अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण विश्व बैंक प्रति वर्ष कब करता है?
(a) मई, में (b) मार्च, में (c) अप्रैल, में (d) जुलाई, में

12. मिश्रित अर्थव्यवस्था का तात्पर्य वह अर्थव्यवस्था है, जिसमें
(a) राज्य द्वारा कृषि और उद्योग दोनों को ही समान रूप से प्रोत्साहित किया जाए
(b) प्राइवेट सेक्टर के साथ-साथ पब्लिक सेक्टर का सह-अस्तित्व हो
(c) भारी उद्योगों के साथ-साथ लघु उद्योगों का महत्त्व हो
(d) अर्थव्यवस्था पर सैनिक के साथ-साथ नागरिक शासकों का नियन्त्रण हो

13. भारतीय अर्थव्यवस्था की कौन-सी विशेषता है/हैं? **[UP Lower 2004]**
1. कृषि की प्रधानता 2. उद्योग की प्रधानता
3. न्यून प्रतिव्यक्ति आय 4. वृहद् बरोजगारी

कूट
(a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3
(c) 2, 3 ओर 4 (d) 1, 3 और 4

1. (c) **2.** (c) **3.** (c) **4.** (a) **5.** (b) **6.** (d) **7.** (c) **8.** (c) **9.** (b) **10.** (c)
11. (d) **12.** (b) **13.** (d)

अध्याय दो
आर्थिक संवृद्धि एवं विकास

''अल्पविकसित व विकासशील देशों की समस्याओं का स्थायी समाधान आर्थिक विकास के रूप में मिलने की बात जोर-शोर से की जाती है। अत: आर्थिक विकास की अवधारणा की समुचित समझ होनी अति आवश्यक है। इस जानकारी के आधार पर विकास के लिए उपयुक्त नीतियों के निर्धारण में सहायता मिलेगी और उनका निरीक्षण-विवेचन भी अधिक प्रभावकारी तरीके से किया जा सकेगा।''

आर्थिक संवृद्धि

- आर्थिक संवृद्धि (Economic Growth) का तात्पर्य, प्रति व्यक्ति वास्तविक आय अथवा शुद्ध भौतिक उत्पाद में वृद्धि से है। सामान्यत: यदि सकल राष्ट्रीय उत्पाद, सकल घरेलू उत्पाद तथा प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि होती है, तो हम कह सकते हैं कि आर्थिक संवृद्धि हो रही है। 70 के दशक में आर्थिक संवृद्धि तथा आर्थिक विकास को एक ही माना जाता था, लेकिन अब इसमें अन्तर किया जाता है। वर्तमान समय में अब आर्थिक संवृद्धि को आर्थिक विकास के एक भाग के रूप में देखा जाता है।
- वास्तव में, आर्थिक संवृद्धि से आशय सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product, GDP), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product, GNP) एवं प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर होने वाली वृद्धि से है अर्थात् आर्थिक संवृद्धि उत्पादन की वृद्धि से सम्बन्धित है। आर्थिक संवृद्धि में यह देखा जाता है कि राष्ट्रीय उत्पादन में सतत् वृद्धि हो रही है अथवा नहीं, यदि राष्ट्रीय उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है, तो इसे संवृद्धि की संज्ञा दी जाएगी।
- आर्थिक संवृद्धि से यह पता चलता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न स्रोतों में मात्रात्मक रूप से कितनी वृद्धि हो रही है।
- आर्थिक विकास का सम्बन्ध लोगों के कल्याण से है। इससे गरीबी, बेरोजगारी तथा असमानता में कमी आती है। आर्थिक संवृद्धि आर्थिक विकास की पूर्व शर्त है।

आर्थिक संवृद्धि दर

- निवल राष्ट्रीय उत्पाद में परिवर्तन की दर 'आर्थिक संवृद्धि दर' (Economic Growth Rate) कहलाती है। इसको राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर भी कहा जाता है।

$$\text{आर्थिक संवृद्धि दर} = \frac{[\text{गत वर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष की NNP में परिवर्तन (वृद्धि या कमी)}]}{[\text{गत वर्ष का NNP}]} \times 100$$

- विकासशील देशों में आर्थिक संवृद्धि दर को विकास हेतु परिवर्तित करना अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या है।

आर्थिक विकास

- सामान्यत: किसी विशेष क्षेत्र, देश अथवा व्यक्तियों के आर्थिक संवृद्धि में वृद्धि को आर्थिक विकास कहा जाता है, परन्तु नीति निर्माण की दृष्टि से आर्थिक विकास में उन सभी प्रयत्नों को शामिल किया जाता है, जिनका लक्ष्य किसी जन-समुदाय की आर्थिक स्थिति व जीवन-स्तर में सुधार करना है।
- आर्थिक विकास (Economic Development) के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों व विशेषज्ञों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं, परन्तु इस सन्दर्भ में जी एम मायर द्वारा प्रस्तुत परिभाषा को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। इस परिभाषा के अनुसार, ''आर्थिक विकास वह प्रक्रिया है, जिसके फलस्वरूप किसी देश की वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय में दीर्घकालिक वृद्धि होती है, बशर्ते इससे गरीबी-रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या व आय वितरण की असमानता न बढ़ने पाए।''
- उपरोक्त वर्णित परिभाषा के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है, जिसमें उत्पादन के विभिन्न साधन; जैसे-पूँजी, श्रम, तकनीक आदि एक-दूसरे पर ऐसा अनुकूल प्रभाव डालते हैं, जिससे कि आय वृद्धि का क्रय आगे बढ़ता रहता है।
- पुन: इस परिभाषा में दीर्घकालिक (Long Term) आय वृद्धि पर बल दिया गया है अर्थात् आर्थिक विकास का होना तभी समझा जाएगा, जब अर्थव्यवस्था में ऐसे परिवर्तन आए जिससे कि प्रतिव्यक्ति वास्तविक आय एक लम्बी अवधि के दौरान उत्तरोत्तर बढ़े।
- विकास की इस परिभाषा में यह शर्त भी जुड़ी है कि गरीबों की संख्या व आय की असमानता भी न बढ़े। इस शर्त पर इस कारण से बल दिया गया है, क्योंकि पिछले कुछ समय से अल्पविकसित देशों की अर्थव्यवस्थाओं में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि तो हुई, परन्तु इसके साथ-साथ आय में असमानता व गरीबों की संख्या भी बढ़ी है।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अनुसार, ''विकास मानवीय प्रयत्न का परिणाम है, आर्थिक विकास एक सतत् प्रक्रिया है, जिससे राष्ट्रीय आप में निरन्तर वृद्धि होती रहती है।''

- हाल के वर्षों में परिभाषा में एक नए पहलू पर जोर दिया जा रहा है। यह पहलू है धारणीय विकास (Sustainable Development)। इस तथ्य का सम्बन्ध इस बात से है कि विकास कार्यक्रमों को बनाते व अपनाते हुए, इस बात पर बल दिया जाए कि वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करते समय भावी पीढ़ियों की जरूरतों व उनके हितों को ध्यान में रखा जाए। भावी पीढ़ियों के हितों पर ध्यान देने की आवश्यकता इस कारण से उठी कि अतीत में आर्थिक विकास की लागतों में पर्यावरण सम्बन्धी क्षति की लागतों की व्यापक रूप से उपेक्षा की गई है।
- अत: स्पष्ट रूप से आर्थिक विकास का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसके परिणामस्वरूप देश के समस्त उत्पादन साधनों का कुशलतापूर्वक विदोहन होता है। राष्ट्रीय आय और प्रतिव्यक्ति आय में निरन्तर एवं दीर्घकालिक वृद्धि होती है तथा जनता के जीवन-स्तर एवं सामान्य कल्याण का सूचकांक बढ़ता है अर्थात् इसमें आर्थिक एवं गैर-आर्थिक दोनों चरों को शामिल किया जाता है।
- आर्थिक विकास में कृषि की अपेक्षा उद्योगों, सेवाओं, बैंकिंग, विनिर्माण आदि क्षेत्रों का सकल राष्ट्रीय आय में हिस्सा अधिक होता है। महबूब-उल-हक ने आर्थिक विकास को गरीबी के विरुद्ध लड़ाई के रूप में परिभाषित किया है, जबकि अमर्त्य सेन ने आर्थिक विकास को अधिकारिता तथा क्षमता के विस्तार के रूप में परिभाषित किया है।

आर्थिक विकास दर

- सकल घरेलू उत्पादन में परिवर्तन की दर 'आर्थिक विकास दर' (Economic Development Rate) कहलाती है।

आर्थिक विकास दर

$$= \frac{\text{गत वर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष के GDP में परिवर्तन (वृद्धि या कमी)}}{\text{गत वर्ष का GDP}} \times 100$$

- 11वीं पंचवर्षीय योजना में भारत की आर्थिक विकास दर सर्वाधिक रही है, जबकि तीसरी पंचवर्षीय योजना में आर्थिक विकास दर सबसे कम रही है। उल्लेखनीय है कि भारत में सर्वाधिक आर्थिक संवृद्धि दर वर्ष 1998-99 में 10.5% रही थी।

आर्थिक विकास एवं आर्थिक संवृद्धि में अन्तर

स्तर	आर्थिक विकास	आर्थिक संवृद्धि
क्षेत्र	यह अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन से सम्बन्धित है। इसमें विकास को मानव विकास सूचकांक में वृद्धि तथा असमानता में कमी से मापा जाता है। इसमें अर्थव्यवस्था के उन परिवर्तनों पर बल दिया जाता है, जिनसे व्यक्ति के जीवन-स्तर में सुधार हो।	यह उत्पादन में होने वाली वृद्धि से सम्बन्धित है। इसमें वृद्धि को सकल घरेलू उत्पाद, उपभोग, सरकारी व्यय, निवेश एवं निर्यात के आधार पर देखा जाता है।
मापन	मानव विकास सूचकांक, लिंग आधारित सूचकांक, मानव निर्धनता सूचकांक, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, साक्षरता।	सकल घरेलू उत्पाद में होने वाली मात्रात्मक वृद्धि।
प्रभाव	इससे अर्थव्यवस्था में मात्रात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन आते हैं।	अर्थव्यवस्था में मात्रात्मक परिवर्तन आता है।

आर्थिक विकास के कारक

- आर्थिक विकास एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें आर्थिक व अनार्थिक दोनों प्रकार के तत्त्व शामिल होते हैं। अत: स्पष्ट रूप से आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक भी आर्थिक व अनार्थिक दोनों ही होंगे। इन दो कारकों के अतिरिक्त प्राकृतिक संसाधन भी आर्थिक विकास की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और विकास की सीमाओं का निर्धारण भी करते हैं।

आर्थिक, अनार्थिक विकास के कारक

आर्थिक	अनार्थिक
पूँजी निर्माण	मानव
कृषि विक्रय अधिशेष	संसाधन
आर्थिक प्रणाली	राजनैतिक स्वतन्त्रता
वित्तीय स्थिरता	न्यायपूर्ण
पूँजी-उत्पादन अनुपात	सामाजिक
विदेशी व्यापार	संगठन
विकासात्मक नियोजन	तकनीकी ज्ञान
श्रम शक्ति व जनसंख्या	विकास की आकांक्षा
आधारभूत संरचना	

पूँजी निर्माण

- पूँजी निर्माण वह प्रक्रिया है, जिससे बचत व निवेश के द्वारा पूँजी स्टॉक में वृद्धि होती है। आधुनिक आर्थिक विकास का मूल बाजार पूँजी है।
- योजना आयोग के अनुसार, "किसी भी देश का आर्थिक विकास पूँजी की उपलब्धता पर ही निर्भर करता है। आय एवं रोजगार के अवसरों की वृद्धि तथा उत्पादन की कुंजी, पूँजी के अधिकाधिक निर्माण में निहित है।"
- कोई भी देश पूँजी निर्माण के बिना अपना समूचित आर्थिक विकास नहीं कर सकता है।
- यदि पूँजी निर्माण की गति धीमी होती है, तो वहाँ के आर्थिक विकास की गति भी धीमी होती है। पूँजी निर्माण से आशय बचत करने एवं उस बचत को उद्योगों में विनियोजित करने से है।

आर्थिक विकास के प्रमुख संकेतक

आर्थिक विकास के प्रमुख संकेतक निम्नलिखित हैं

मानव विकास सूचकांक
(Human Development Index, HDI)

- मानव विकास सूचकांक की अवधारणा का प्रतिपादन वर्ष 1990 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) से सम्बद्ध पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब-उल-हक तथा अन्य सहयोगी अर्थशास्त्री ए के सेन तथा सिंगर हंस ने किया। मानव विकास सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा व आय के स्तर के आधार पर तैयार किया जाने वाला संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम यूएनडीपी (UNDP) का सूचकांक है। HDI का अधिकतम मूल्य 1 तथा न्यूनतम मूल्य 0 होता है।

मानव विकास आयाम या घटकों की रचना तीन सूचकांकों के आधार पर होती है

1. जीवन प्रत्याशा सूचकांक (Life-expectancy Index)
2. शिक्षा सूचकांक (Education Index)
3. जीवन निर्वाह का स्तर (Standard of Living) जिसमें क्रय-शक्ति समायोजित प्रतिव्यक्ति आय (डॉलर) में व्यक्त करते हैं।

- ये तीनों घटकों जो अलग-अलग तीन चरों पर आधारित होते हैं, सभी मिलकर मानव विकास सूचकांक का निर्माण करते हैं।
  इस प्रकार, मानव विकास सूचकांक = $\frac{1}{3}$ (जीवन प्रत्याशा सूचकांक + शिक्षा सूचकांक + GDP सूचकांक)
- इन घटकों के लिए स्वास्थ्य स्तर का आकलन जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy) के द्वारा शैक्षणिक स्तर (Level of Education) का प्रौढ़ साक्षरता और प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक स्तर पंजीकरण के आधार पर तथा रहन-सहन स्तर (Standard of Living) का आकलन आय के स्तर एवं क्रय-शक्ति क्षमता (Purchasing Power Parity) के आधार पर किया जाता है।

सूचकांक का मापन

- अत्यधिक उच्च मानव विकास वाले देश का मापन 0.800 एवं इससे अधिक
- उच्च मानव विकास वाले देश का मापन 0.700 से 0.799
- मध्यम मानव विकास वाले देश का मापन 0.550 से 0.699
- निम्न मानव विकास वाले देश का मापन 0.352 से 0.549

मानव विकास रिपोर्ट 2020

- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा वर्ष 2020 के लिए मानव विकास सूचकांक रिपोर्ट 25 दिसम्बर, 2020 में जारी की गई। इस रिपोर्ट में विश्व के कुल 189 देशों के लिए मानव विकास सूचकांक आंकलित किए गए हैं।
- 189 देशों की मानव विकास सूचकांक में भारत का 131वाँ स्थान है। इनमें 0.352–0.549 के मध्य सूचकांक वाले देश को कम मानव विकास वाले देश के समूह में रखा गया है, 0.550–0.699 तक सूचकांक वाले देश को मध्यम विकास वाले देशों के समूह में रखा गया है। इसी प्रकार जिन देशों का सूचकांक 0.700 से 0.799 तक है, वे देश उच्च मानव विकास सूचकांक वाले देशों के समूह में रखे गए हैं। इसके अतिरिक्त 0.800 से अधिक सूचकांक वाले देशों को बहुत ऊँचे मानव विकास सूचकांक वाले देशों के अन्तर्गत रखा गया है।

शीर्षस्थ मानव विकास वाले देश (2020)

रैंक	देश	सूचकांक
1	नॉर्वे	0.957
3	आयरलैण्ड	0.955
2	स्विट्जरलैण्ड	0.955
4	हाँगकाँग	0.949

निम्नतम पायदान पर स्थित देश (2020)

रैंक	देश	सूचकांक
186	दक्षिण सूडान	0.433
187	चाड	0.398
188	सेण्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक	0.397
189	नाइजर	0.394

भारत एवं पड़ोसी देश (2019)

स्थिति	रैंक	देश	सूचकांक
उच्च विकास वाले देश	72	श्रीलंका	0.782
उच्च विकास वाले देश	85	चीन	0.761
मध्य विकास वाले देश	131	भारत	0.645
मध्य विकास वाले देश	133	बांग्लादेश	0.632
मध्य विकास वाले देश	142	नेपाल	0.602
मध्य विकास वाले देश	154	पाकिस्तान	0.557

मानव विकास रिपोर्ट के अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य

वर्ष 2010 से मानव विकास रिपोर्ट में तीन नए सूचकांक शामिल किए गए हैं; जैसे

1. असमानता प्रभाव (Impact of Inequality)
2. लिंग असमानता (Gender Disparities)
3. बहुआयामी गरीबी सूचकांक (Multidimensional Poverty Index)

- साथ ही वर्ष 2010 से साक्षरता और आय पर इनके संकेतकों को नया रूप दिया गया है, जिसके तहत सकल नामांकन दर (Gross Enrolment Rate) 'सकल वयस्क साक्षरता दर एवं (Adult Literacy Rate) को क्रमश: स्कूलावधि के अनुमानित वर्ष एवं 'स्कूलावधि के औसत वर्ष' से प्रतिस्थापित किया गया है और 'सकल घरेलू उत्पाद' का स्थान 'सकल राष्ट्रीय आय' ने लिया है, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय आय प्रवाहों को भी शामिल किया जाता है।
- UNDP ने वर्ष 2010 से मानव विकास सूचकांक तैयार करने के लिए जिस बहुआयामी निर्धनता सूचकांक (Multidimensional Poverty Index) का उपयोग किया है, उनके अन्तर्गत एक ही परिवार के सदस्यों में पाए जाने वाले शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन-स्तर से सम्बन्धित अभावों पर ध्यान दिया गया है अर्थात् भारत में गरीबी-रेखा से ऊपर के लोगों में शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन-दशाओं से सम्बन्धित अभाव पाए जाते हैं।

असमानता समायोजित मानव विकास सूचकांक
(Inequality Adjusted HDI, IHDI)

यह सूचकांक किसी और देश के मानव विकास सूचकांक के तीन घटकों पर औसत परिणाम से अलग जाते हुए उसी देश के नागरिकों में उन तीन घटकों के विभाजन से व्याप्त असमानता को प्रदर्शित करता है; जैसे-शिक्षा की बात है, तो वह समाज के विभिन्न वर्गों में शिक्षा स्तर का मापन करता है न कि केवल राष्ट्रीय औसत का। वर्ष 2020 में प्रकाशित इस सूचकांक में भारत का माप 0.475 है। इस सूचकांक में भारत का स्थान कुल 152 देशों में 104वाँ था।

जीवन का भौतिक गुणवत्ता सूचकांक
(Physical Quality Index of Life)

- इस सूचकांक का विकास डेविड मॉरिश द्वारा किया गया था, जिसके अन्तर्गत आर्थिक विकास के संकेतकों के रूप में तीन तत्त्वों की गणना की जाती है। यह एक सामाजिक सूचकांक है, *इसके अन्तर्गत तीन संकेतकों का चुनाव किया जाता है*
  1. जीवन-प्रत्याशा (Life Expectancy)
  2. शिशु मृत्युदर (Child Mortality Rate)
  3. मौलिक साक्षरता (Fundamental Education)

- इन तीनों संकेतकों का औसत लेकर हम जीवन की भौतिक गुणवत्ता का सूचकांक (PQLI) निकाल सकते हैं।
- जीवन की भौतिक गुणवत्ता का सूचकांक
  $= \frac{1}{3}$ (जीवन प्रत्याशा + शिशु मृत्युदर + मौलिक साक्षरता)
- वर्ष 2013 की जीवन की भौतिक गुणवत्ता के अनुसार, स्विट्जरलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया व नॉर्वे प्रथम तीसरे स्थान पर था। नाइजीरिया का इस सूचकांक में अन्तिम स्थान था। भारत इस सूचकांक में 66वें स्थान पर था।
- मानव निर्धनता सूचकांक सर्वप्रथम वर्ष 1997 में मानव विकास रिपोर्ट के अन्तर्गत ही प्रस्तुत किया गया।
- जीवन के भौतिक गुणवत्ता सूचकांक का मान 0 से 100 के बीच होता है।

बहुआयामी निर्धनता सूचकांक
(Multi-dimensional Poverty Index, MPI)

- यह स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन-स्तर में व्यक्तिगत स्तर पर बहुआयामी वंचना की पहचान करता है। इसके लिए हाउसहोल्ड सर्वे से प्राप्त माइक्रो डाटा का प्रयोग किया जाता है। HDI के विपरीत इसमें एक ही सर्वेक्षण से सभी संकेतकों के सन्दर्भ में प्राप्त आँकड़ों का प्रयोग किया जाता है। सर्वेक्षण में शामिल हाउसहोल्ड में प्रत्येक व्यक्ति का वर्गीकरण 'गरीब' और 'गरीब नहीं' के रूप में किया जाता है? यह वर्गीकरण इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अनुभव क्या हैं। इन आँकड़ों को समायोजित कर गरीबों के राष्ट्रीय मानक की पहचान की जाती है।
- मल्टीडायमेन्शनल पॉवर्टी इण्डेक्स (MPI) जनसंख्या के उस हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है, जो बहुआयामी निर्धनता का शिकार है और जिसने तीव्रता व सघनता के साथ उस वंचना को महसूस किया है। इसके शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन-स्तर से सम्बन्धित कुल दस उपमानक हैं।

शिक्षा से सम्बन्धित

- पाँच साल की स्कूली शिक्षा से वंचित लोग।
- स्कूल में जाने योग्य बच्चों का स्कूल में नामांकन नहीं।

स्वास्थ्य से सम्बन्धित

- कुपोषण (Malnourishment)
- शिशु मृत्यु-दर (प्रति हजार जीवित-प्रसव) (Child Mortality Rate)

जीवन-स्तर से सम्बन्धित

- बिजली का अभाव
- स्वच्छ पेयजल की अनुपलब्धता
- पर्याप्त सफाई व्यवस्था
- घर का गन्दा/कच्चा फर्श
- स्वच्छ ईंधन का अभाव
- वाहन का अभाव

- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की मानव विकास रिपोर्ट में निर्धनता की स्थिति के आकलन हेतु 'ह्यूमन पॉवर्टी इण्डेक्स' (HPI) का उपयोग वर्ष 1997 से ही किया जाता था, किन्तु अब उपरोक्त नया मल्टीडायमेंशनल पॉवर्टी इण्डेक्स (MPI) वर्ष 2010 से मानव विकास रिपोर्ट में शामिल किया गया है।
- वर्ष 2015 में जारी बहुआयामी निर्धनता सूचकांक के अनुसार दक्षिण एशिया में सबसे गरीब देश अफगानिस्तान है, जहाँ 66% लोग बहुआयामी गरीबी से ग्रसित हैं।
- वर्ष 2016 में जारी रिपोर्ट के अनुसार, विकासशील देशों में 1.5 अरब लोग बहुआयामी गरीबी में जीवन-यापन करने पर विवश हैं, जिनमें 54% लोग दक्षिण एशिया में और 34% लोग उप सहारा अफ्रीका में रह रहे हैं।

लिंग असमानता सूचकांक
(Gender Inequality Index, GII)

- लिंग आधारित विकास सूचकांक ज्ञात करने के लिए उन्हीं तीन सूचकांकों का प्रयोग किया जाता है, जिनका HDI में प्रयोग किया जाता है। इस सूचकांक से पुरुष तथा महिला की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया जाता है।
- लिंग आधारित विकास सूचकांक $= \frac{1}{3}$ (जीवन प्रत्याशा सूचकांक + शिक्षा सूचकांक + सकल घरेलू उत्पादक सूचकांक) जहाँ HDI औसत उपलब्धि की माप करता है, वहीं GDI पुरुषों तथा स्त्रियों की।
- वर्ष 2020 के लिंग असमानता सूचकांक में भारत का स्थान 123वाँ है।

लिंग आधारित विकास सूचकांक

- मानव विकास रिपोर्ट वर्ष 2015 में इसका उल्लेख किया गया है। लिंग सशक्तीकरण माप में महिलाओं के अधिकार के स्थान पर उन्हें उपलब्ध अवसरों का महत्त्व दिया जाता है।
  इसके अन्तर्गत तीन क्षेत्रों में लिंगीय विषमता को लिया जाता है
  1. निर्णयन क्षमता एवं राजनीतिक भागीदारी
  2. आर्थिक भागीदारी एवं निर्णय लेने सम्बन्धित
  3. आर्थिक संसाधनों पर अधिकार

हैप्पी प्लैनेट इण्डेक्स
(Happy Planet Index, HPI)

- इस सूचकांक को **न्यू-इकोनॉमिक्स फाउण्डेशन** द्वारा तैयार किया जाता है। इसके अन्तर्गत यह माना गया है कि प्रति व्यक्ति आय नहीं बल्कि स्वास्थ्य एवं खुशहाल जीवन को आर्थिक विकास का मापक माना जाना चाहिए।
- इस सूचकांक का उद्देश्य यह बताना नहीं कि विश्व में सबसे खुशी वाला देश कौन है, बल्कि यह उस सापेक्षिक कुशलता को प्रदर्शित करता है, जिससे कोई देश पृथ्वी पर उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अपने नागरिकों के स्वास्थ्य तथा खुशहाल जीवन में परिवर्तित करने के लिए करता है। इस सूचकांक का आधार जीवन सन्तुष्टि, जन्म के समय जीवन प्रत्याशा तथा पारिस्थितिकी की स्थिति है।

$$\text{हैप्पी प्लैनेट इण्डेक्स (HPI)} = \frac{\text{सन्तुलित जीवन} \times \text{जीवन प्रत्याशा}}{\text{पारिस्थितिकी}}$$

विश्व प्रसन्नता सूचकांक, 2021

- विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र की वहनीय विकास समाधान नेटवर्क द्वारा 21 मार्च, 2021 को जारी की गई। यह इस संस्था द्वारा जारी तृतीय प्रसन्नता रिपोर्ट थी। यह 9वीं रिपोर्ट है।

रैंक	देश
1	फिनलैण्ड
2	डेनमार्क
3	स्विट्ज़रलैण्ड
4	आइसलैण्ड
5	नीदरलैण्ड
105	पाकिस्तान
139	भारत

- अफ़ग़ानिस्तान इस सूची में सबसे अन्तिम पायदान पर अर्थात् 149वें स्थान पर है। इस सूचकांक में भारत का स्थान पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल और बांग्लादेश से नीचे है।

सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता
(Gross National Happiness, GNH)

- जीएनएच (GNH) देश की गुणवत्ता को अधिक समग्र तरीके से मापता है और इसके तहत ऐसा विश्वास किया जाता है कि मानव समाज का विकास तब होता है, जब भौतिक और आध्यात्मिक विकास साथ-साथ होते हैं और वे एक-दूसरे के पूरक होते हैं। इसकी अवधारणा वर्ष 1972 में भूटान के नरेश जिग्मे सिंग्मे वांगचुक ने की थी। *जीएनएच (GNH) को मापने के लिए प्रसन्नता के सात संकेतकों पर विचार किया जाता है*
  1. शारीरिक
  2. मानसिक
  3. अच्छा शासन
  4. पारिस्थितिक जीवन शक्ति
  5. सामाजिक
  6. आर्थिक एवं
  7. कार्यस्थल

वैश्विक भुखमरी सूचकांक
(Global Hunger Index, GHI)

- वैश्विक भुखमरी सूचकांक में एक बहुआयामी सांख्यिकीय आँकड़ों का प्रयोग कर देश की भुखमरी के सन्दर्भ में स्थिति को स्पष्ट किया जाता है। इस सूचकांक को इण्टरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इन्स्टीट्यूट द्वारा विकसित किया गया था। इसका सर्वप्रथम प्रकाशन वर्ष 2006 में हुआ। यह सूचकांक प्रतिवर्ष निकाला जाता है।
- प्रत्येक वर्ष इस सूचकांक में किसी एक मुख्य मुद्दे पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जोकि भुखमरी को प्रभावित करता है।
- वैश्विक भुखमरी सूचकांक चार मानकों के आधार पर निकाला जाता है। *इन चारों मानकों का समान महत्त्व है*
  1. अल्पपोषित लोगों का अनुपात।
  2. पाँच वर्ष से कम आयु के औसत से कम वजन के बच्चों का अनुपात।
  3. पाँच वर्ष से कम आयु की औसत लम्बाई से कम लम्बाई के बच्चों का अनुपात।
  4. पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु-दर।
- वर्ष 2021 के सूचकांक में 116 देशों में भारत का 101वाँ स्थान है।

सहस्राब्दि विकास लक्ष्य रिपोर्ट, 2015

- आर्थिक और सामाजिक मामलों के संयुक्त राष्ट्र विभाग द्वारा तैयार किए गए सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों के आकलन को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सहस्राब्दि विकास लक्ष्य रिपोर्ट 2015 (Millennium Development Goals Report, 2015) शीर्षक से जारी की गई। MDG रिपोर्ट, 2015 के अनुसार, वैश्विक स्तर पर प्रतिदिन $1.25 (अब $ 1.90) से कम पर जीवन निर्वाह करने वालों का अनुपात भारत में जहाँ वर्ष 1994 में 49.9% था, वहीं यह अनुपात वर्ष 2011 में घटकर 24.7% रह गया।

सतत विकास लक्ष्य

ब्राजील के रियो-डि-जेनेरो शहर में जून, 2012 में सतत विकास सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (रियो + 20) में 'द फ्यूचर वी वांट' नामक परिणाम दस्तावेज जारी किया गया। इस दस्तावेज द्वारा अधिदेशित तीस सदस्यीय कार्यदल ने जुलाई, 2014 में 17 सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals, SDG) जारी किए हैं। इन लक्ष्यों में व्यापक स्तर पर सम्पोषणीय विकास के मुद्दे शामिल किए गए हैं। इन लक्ष्यों को संयुक्त राष्ट्र के वर्ष 2015 पश्चात् विकास एजेण्डा (Post-2015 Development Agenda) में समेकित किए जाने की सम्भावना है। इन सतत विकास लक्ष्यों को 2030 तक प्राप्त करना है।

मानव पूँजी रिपोर्ट

- विश्व बैंक द्वारा सितम्बर, 2020 को मानव पूँजी रिपोर्ट जारी की गई। इस रिपोर्ट में 174 देशों का एक सूचकांक तैयार किया गया है। इस सूचकांक में विश्व के इन 174 देशों को उस आधार पर रैंकिंग प्रदान की गई है कि वे शिक्षा, कौशल एवं रोजगार को केन्द्र बिन्दु बनाते हुए कितने असरदार एवं अच्छे तरीके से अपनी मानव पूँजी का उपयोग कर विकास की ओर अग्रसर हैं।
- इस सूचकांक में शामिल देशों को 0 से 1 तक अंक प्रदान किए गए हैं। 0 सबसे खराब तथा 1 सबसे अच्छा सूचकांक है।
- इस सूची में **सिंगापुर** 0.87 अंकों के साथ **प्रथम** स्थान पर तथा सेन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक 35.48 अंकों के साथ **अन्तिम** स्थान पर रहा।
- इस सूची में हाँगकाँग, जापान क्रमशः दूसरे, तीसरे स्थान पर हैं।
- **भारत** इस सूची में 0.49 अंकों के साथ 116वें स्थान पर है।

सेल्फ चैक

बढ़ाएँ आत्मविश्वास...

1. दक्षिण एशिया के किस देश ने 'सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता' को अपने नागरिकों की 'कुशल क्षेम' के सूचकांक के रूप में माना है? **[UPPCS (Mains) 2009]**

(a) भारत *(b)* भूटान *(c)* श्रीलंका *(d)* म्यांमार

2. मानव निर्धनता सूचकांक किस वर्ष की मानव विकास रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया था? **[UPPCS 2010]**

(a) वर्ष 1994 *(b)* वर्ष 1995
(c) वर्ष 1996 *(d)* वर्ष 1997

3. संयुक्त राष्ट्र मानव विकास कार्यक्रम द्वारा वर्ष 2020 के लिए जारी मानव विकास रिपोर्ट में निम्नलिखित में से कौन-सा देश उच्च विकास वाले देश के अन्तर्गत आता है?

(a) श्रीलंका *(b)* भारत
(c) चाड *(d)* सिएरा लियोन

4. निम्न में कौन-सा मानव विकास सूचकांक HDI में शामिल नहीं है? **[UPPCS (Mains) 2008, 2009]**

(a) जीवन प्रत्याशा
(b) वास्तविक प्रति व्यक्ति आय
(c) सामाजिक असमानता
(d) प्रौढ़ साक्षरता

5. किसी देश की आर्थिक संवृद्धि का सबसे उपयुक्त मापदण्ड है उसका **[IAS 2000]**

(a) सकल घरेलू उत्पाद *(b)* निवल घरेलू उत्पाद
(c) निवल राष्ट्रीय उत्पाद *(d)* प्रति व्यक्ति वास्तविक आय

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. आर्थिक विकास के आधारभूत आवश्यकता प्रत्यागम का प्रतिपादन विश्व बैंक द्वारा वर्ष 1970 में किया गया।
2. इस अवधारणा में लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए अनिवार्य मूलभूत तथ्यों की उपलब्धता को मानक माना गया।
3. विश्व बैंक द्वारा मूलभूत तत्त्वों में रोटी, कपड़ा, मकान, पीने का पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा परिवहन जैसी सुविधाओं को सम्मिलित किया जाता है।
4. विश्व बैंक में इस अवधारणा का प्रतिपादन अर्थशास्त्री महबूब-उल-हक ने किया था।

उपरोक्त कथनों में कौन-से कथन सही हैं?

(a) 1 और 2 *(b)* 1, 2 और 3
(c) 1, 2 और 4 *(d)* ये सभी

7. जीवन के भौतिक गुणवत्ता सूचकांक के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. जीवन के भौतिक गुणवत्ता सूचकांक का प्रतिपादन सर्वप्रथम डेविड मॉरिश ने वर्ष 1976 में किया।
2. इस सूचकांक के अन्तर्गत तीन घटक होते हैं।
   (i) जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (ii) शिशु मृत्यु दर
   (iii) साक्षरता
3. इस सूचकांक को वैज्ञानिक रूप से विकसित करने का श्रेय डेविड मॉरिश को जाता है।
4. जीवन के भौतिक गुणवत्ता सूचकांक का मान 0 से 100 के बीच होता है।

उपरोक्त कथनों में कौन-से कथन सही हैं?

(a) 1 और 2 *(b)* 1, 2 और 3
(c) 1, 2 और 4 *(d)* ये सभी

8. निम्नलिखित में से कौन-से आर्थिक विकास के आधुनिक मापक हैं?

1. जीवन का भौतिक गुणवत्ता सूचकांक
2. पर्यावरणीय कुजनेट्स वक्र
3. सकल घरेलू बचत दर का अधिक होना
4. क्रय-शक्ति समता सिद्धान्त

कूट

(a) 1 और 2 *(b)* 1, 2 और 3
(c) 1, 2 और 4 *(d)* ये सभी

9. भारतीय मानव विकास प्रतिवेदन प्रतिदर्श गाँव (Sample Village) के लिए नहीं देता है **[IAS 2000]**

(a) आधारिक संरचना एवं सुख साधन सूचकांक
(b) शिक्षा सम्बन्धित सूचकांक
(c) स्वास्थ्य सम्बन्धित सूचकांक
(d) बेरोजगारी सम्बन्धित सूचकांक

10. मानवीय गरीबी सूचकांक किस वर्ष में विकसित किया गया? **[UPPCS Spl (Mains) 2004]**

(a) वर्ष 1991 में *(b)* वर्ष 1995 में
(c) वर्ष 1997 में *(d)* वर्ष 2001 में

11. मानव विकास की बात करें, तो एशियाई देशों में सर्वोत्तम निष्पादन है **[IAS 2000]**

(a) चीन का *(b)* मलेशिया का
(c) कोरिया का *(d)* फिलीपीन्स का

12. भारत के किस राज्य ने मानव विकास प्रतिवेदनों का प्रकाशन सर्वप्रथम किया था? **[UPPCS 2000]**

(a) हिमाचल प्रदेश *(b)* केरल
(c) मध्य प्रदेश *(d)* आन्ध्र प्रदेश

13. निम्नलिखित में से कौन-सा मानवीय विकास सूचकांक का तत्त्व नहीं है? **[UP Lower (Mains) 2004]**

(a) उपभोग व्यय *(b)* शिशु मृत्यु-दर
(c) वयस्क साक्षरता दर *(d)* स्वास्थ्य

1. (b) **2.** (d) **3.** (a) **4.** (c) **5.** (d) **6.** (c) **7.** (d) **8.** (b) **9.** (d) **10.** (c)
11. (c) **12.** (c) **13.** (b)

अध्याय तीन
राष्ट्रीय आय

''राष्ट्रीय आय, अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है, जो नीति-निर्माण व कल्याणकारी राज्य के निर्माण की दिशा में अत्यधिक उपयोगी है। राष्ट्रीय आय की गणना के माध्यम से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में सन्तुलन स्थापित करने व प्राथमिकता की स्थापना करने में अभूतपूर्व सहायक है। सामान्यत: इसे अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण सूचकांक माना जा सकता है।''

राष्ट्रीय आय का अर्थ

- राष्ट्रीय आय (National Income) का अर्थ किसी देश की अर्थव्यवस्था में किसी समय अवधि में (साधारणतया एक वर्ष के दौरान) उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल मुद्रा मूल्य से है। दूसरे शब्दों में, किसी एक लेखा वर्ष की अवधि के दौरान किसी अर्थव्यवस्था में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के बाजार मूल्य को राष्ट्रीय आय कहा जाता है।
  इसका अभिप्राय यह है कि देश के विभिन्न उद्योगों तथा व्यवसायों द्वारा जितना उत्पादन एक वर्ष में होता है, उसका मूल्यांकन कर लिया जाता है। इस राशि में ह्रास (Depreciation) की राशि घटा दी जाती है, परिणामस्वरूप जो राशि प्राप्त होती है, वह देश की राष्ट्रीय आय कहलाती है। राष्ट्रीय आय का आशय निवल या शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product; NNP) से है।

राष्ट्रीय आय की अवधारणाएँ

राष्ट्रीय आय की अवधारणा में तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं

1. पहली, राष्ट्रीय आय की अवधारणा वस्तुओं के निरन्तर चलने वाला एक प्रवाह है अर्थात् राष्ट्रीय आय से आशय-किसी एक समय पर उपलब्ध वस्तुओं के स्टॉक से नहीं, बल्कि किसी समयावधि में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह से है।
2. दूसरी, राष्ट्रीय आय की अवधारणाएँ में सभी प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की बाजार कीमत शामिल की जाती है और एक-वस्तु की कीमत एक ही बार गिनी जाती है, इसमें अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य ही गिना जाता है, जिससे दोहरी गणना से बचाव हो सके।
3. तीसरी, राष्ट्रीय आय की अवधारणा के साथ एक निश्चित समय की अवधि जुड़ी होती है। यह अवधि साधारणतया एक वर्ष की होती है।

- राष्ट्रीय आय की गणना के सम्बन्ध में मूलत: दो अवधारणाओं; जैसे—राष्ट्रीय उत्पाद तथा घरेलू उत्पाद को आधार स्वरूप लिया जाता है। शेष सभी धारणाएँ इन धारणाओं पर आधारित इनके स्वरूप हैं। राष्ट्रीय आय से सम्बद्ध समग्र अवधारणाओं को *निम्नांकित प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं*

सकल घरेलू उत्पाद (GDP)

- देश की घरेलू सीमा के अन्दर एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के अन्तिम मौद्रिक मूल्य के योग को सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product, GDP) कहते हैं।
- सकल घरेलू उत्पाद में कुछ भाग उन विदेशियों की उत्पादक सेवाओं का परिणाम हो सकता है, जिन्होंने अपनी पूँजी तथा तकनीकी ज्ञान का उपयोग कर देश की कुल उत्पत्ति में कुछ भाग का उत्पादन किया है।
- अत: इसमें इस बात का ध्यान नहीं रखा जाता कि उत्पादन किसी देशवासी द्वारा हो रहा है या किसी विदेशी द्वारा, परन्तु उत्पादन देश की भौगोलिक सीमा के अन्दर होना आवश्यक है। *सकल घरेलू उत्पाद को निम्न सूत्र में व्यक्त किया जा सकता है*

$$GDP = C + I + G$$

जहाँ, C = *उपभोग,* I = *निवेश,* G = *सरकारी व्यय*

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

- किसी देश के नागरिकों द्वारा एक निश्चित समयावधि सामान्यत: एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के अन्तिम मौद्रिक मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product, GNP) कहते हैं।
- सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एवं सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) में अन्तर यह है कि सकल राष्ट्रीय उत्पाद के अन्तर्गत देश की सीमा के अन्दर विदेशियों द्वारा अर्जित आय (M) को घटा दिया जाता है और विदेशों में भारतीयों द्वारा अर्जित आय (X) को जोड़ दिया जाता है।

अत: सकल राष्ट्रीय उत्पाद में देशवासियों द्वारा देश के बाहर उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य को भी सम्मिलित किया जाता है। *इसे निम्न रूपों में भी व्यक्त किया जा सकता है*

$$GNP = GDP + [X - M]$$

- बन्द अर्थव्यवस्था में X एवं M के मूल्य समान होते हैं।

अर्थात् $[X - M] = 0$

इस रूप में $GNP = GDP$

बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद

देश की सीमा के अन्तर्गत निवासी और गैर-निवासी उत्पादक इकाइयों द्वारा बाजार मूल्य पर व्यक्त मूलवर्द्धनों का योग या सम्पूर्ण अन्य वस्तुओं तथा सेवाओं का बाजार मूल्य (Market Price, MP) पर व्यक्त मूल्य ही बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) कहलाता है।

साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद

बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) तथा साधन लागत (Factor Cost, FC) पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{FC}) के मध्य में अन्तर पाया जाता है। यह परोक्ष कर तथा सब्सिडी की मात्रा या निवल राष्ट्रीय उत्पाद के कारण होता है।

$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – निवल परोक्ष कर

या $GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद

किसी भी वस्तु के उत्पादन एवं उपभोग के दौरान उसका मूल्य ह्रास होता है। यह मूल्य एक तरह से पूँजी स्टॉक की खपत होती है। जब सकल आय में से मूल्य ह्रास को घटाया जाता है, तो निवल अथवा शुद्ध राशि प्राप्त होती है।

वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (Real Gross Domestic Product, RGDP) सकल घरेलू उत्पाद का एक सही माप है।

जब सकल घरेलू उत्पाद की गणना स्थिर मूल्य (Constant Price) पर की जाती है उसे वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं। इसमें मुद्रास्फीति को भी समायोजित किया जाता है।

सांकेतिक सकल घरेलू उत्पाद

मुद्रास्फीति या के कारण बाजार मूल्य में होने वाले वार्षिक परिवर्तन को सांकेतिक (Nominal) GDP में शामिल करते हैं। सांकेतिक GDP का मूल्यांकन बाजार के वर्तमान मूल्य पर करते हैं।

क्रय-शक्ति समता विधि

क्रय-शक्ति समता विधि (Purchasing Power Parity, PPP method) का प्रयोग सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund, IMF) द्वारा वर्ष 1988 में विभिन्न देशों के रहन-सहन स्तर के निर्धारण हेतु किया गया।

इस विधि में किसी देश विशेष की सकल राष्ट्रीय आय को, देश के अन्दर मुद्रा की क्रय-शक्ति के आधार पर ज्ञात किया जाता है। GDP को क्रय-शक्ति समता विधि द्वारा भी मापा जाता है। सांकेतिक GDP को ही इस स्थिति में प्रयोग में लाते हैं।

साधन लागत एवं बाजार मूल्य (FC and MP)

- साधन लागत (Factor Cost, FC) वास्तव में किसी वस्तु के उत्पादन में लगी लागत मूल्य (Input Cost, IC) होती है। सरकार द्वारा इस लागत मूल्य पर अप्रत्यक्ष कर लगाया जाता है। सरकार द्वारा कभी-कभी सब्सिडी भी दी जाती है जिससे उत्पाद को बाजार मूल्य पर उपलब्ध कराया जा सके।
- यदि कर लगाया जाता है, तो वस्तु का बाजार मूल्य (Market Price, MP) बढ़ जाता है और यदि सब्सिडी दी जाती है, तो बाजार मूल्य लागत मूल्य से कम हो जाता है।
- MP = FC + (अप्रत्यक्ष कर या सब्सिडी)
  - —अब, GDP_{MP} = देश की सीमा के अन्दर अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्य पर GDP का आकलन
  - —$GDP_{MP} = GDP_{FC}$ +अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax)- सब्सिडी
  - —GDP_{FC} = देश की सीमा के अन्दर अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के साधन लागत पर GDP का आकलन
  - —$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी
  - —GNP_{MP} = देशवासियों द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के साधन लागत पर GNP का आकलन
  - —$GNP_{MP} = GNP_{FC}$ + अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी
  - —GNP_{FC} = देशवासियों द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के साधन लागत पर GNP का आकलन
  - —$GNP_{FC} = GNP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

निवल घरेलू उत्पाद (NDP)

- जब सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में से उत्पादन की प्रक्रिया में से प्रयुक्त मशीन और पूँजी के मूल्य में आई कमी (मूल्य ह्रास) को घटा दिया जाता है, तो इसे निवल घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product, NDP) कहते हैं अर्थात् NDP = GDP – Depreciation (मूल्य ह्रास)

निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)

- सकल राष्ट्रीय उत्पाद में से जब उत्पादन की प्रक्रिया में प्रयुक्त मशीन और पूँजी के मूल्य में आई कमी (मूल्य ह्रास) को घटा दिया जाता है, तो इसे निवल राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product, NNP) या शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद कहते हैं।

  अर्थात् NNP = GNP – Depreciation (मूल्य ह्रास)

अन्य अवधारणाएँ

वैयक्तिक आय (Personal Income, PI)

- घरेलू क्षेत्र द्वारा प्राप्त आय को ही वैयक्तिक आय (PI) कहते हैं। यह देशवासियों द्वारा वास्तव में प्राप्त आय है।

- वैयक्तिक आय को ज्ञात करने के लिए राष्ट्रीय आय में से निगम करों तथा निगमों द्वारा अवितरित लाभांश एवं सामाजिक सुरक्षा योजना के लिए भुगतान को घटाने तथा सरकारी हस्तान्तरण भुगतान, व्यापारिक हस्तान्तरण भुगतान एवं सरकार से प्राप्त शुद्ध ब्याज को जोड़ने से प्राप्त होता है; जैसे

वैयक्तिक आय = राष्ट्रीय आय – निगम कर – निगमों द्वारा अवितरित लाभांश – सामाजिक सुरक्षा योजना के लिए भुगतान + सरकारी हस्तान्तरण भुगतान + व्यापारिक हस्तान्तरण भुगतान + सरकार से प्राप्त शुद्ध ब्याज

प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income)

- साधारणत: प्रतिव्यक्ति आय को ही आर्थिक वृद्धि के मापन के लिए स्वीकार किया जाता है।

$$\text{प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{राष्ट्रीय आय}}{\text{जनसंख्या}}$$

वास्तविक प्रति व्यक्ति आय (Real Per Capita Income)

- स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय के आकलन के पश्चात् जब देश की कुल जनसंख्या से विभाजित करने पर जो परिणाम प्राप्त होता है, उसे ही वास्तविक प्रति व्यक्ति आय कहा जाता है।

$$\text{वास्तविक प्रति व्यक्ति आय} = \frac{\text{स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय}}{\text{कुल जनसंख्या}}$$

व्यय योग्य वैयक्तिक आय (Disposable Personal Income, DPI)

- राष्ट्रीय आय का वह भाग जिसको लोग अपनी इच्छा से जब चाहें खर्च कर सकते हैं, उसे व्यय योग्य वैयक्तिक आय (DPI) कहा जाता है। सभी प्रकार के प्रत्यक्ष कर चुकाने के बाद जो आय बचती है, उसको लोग अपनी इच्छानुसार व्यय कर सकते हैं या बचत कर सकते हैं।

DPI = उपभोग + बचत

DPI = व्यक्तिगत आय – प्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

वास्तविक राष्ट्रीय आय (Real National Income, RNI)

- किसी देश में राष्ट्रीय आय की वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को वास्तविक राष्ट्रीय आय (RNI) कहते हैं। इसे आर्थिक वृद्धि के सूचक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

निजी आय (Private Income)

- सरकारी क्षेत्र के अतिरिक्त निजी क्षेत्र द्वारा प्राप्त की गई कुल आय को निजी आय कहते हैं। इसमें निजी निगम क्षेत्र एवं घरेलू क्षेत्र दोनों शामिल किए जाते हैं।

निजी आय = निजी क्षेत्र को अपने स्रोत से प्राप्त आय + घरेलू सरकार से प्राप्त सहायता भुगतान + शेष विश्व से प्राप्त सहायता

हरित राष्ट्रीय आय (Green National Income, GNI)

- हरित राष्ट्रीय आय की गणना में वर्ष में वस्तुओं एवं सेवाओं के शुद्ध उत्पादन के योग में से उत्पादन की प्रक्रिया में देश के पर्यावरण और पारिस्थितिकी को जो क्षति पहुँचती हैं, उसके मौद्रिक मूल्य को कम कर दिया जाता है।

हरित जी डी पी (Green GDP)

- हरित GDP का अर्थ है– पर्यावरणीय परिणामों के साथ आर्थिक विकास सूचकांक तैयार करना। हरित सूचकांक बताता है कि आर्थिक विकास के लिए किसी देश ने अपनी जैव-विविधता को कितना नुकसान पहुँचाया अथवा उससे पर्यावरण पर कितना प्रभाव पड़ा।
- हरित GDP की गणना सकल घरेलू उत्पाद में से शुद्ध प्राकृतिक पूँजी की खपत के (जिसमें संसाधनों में आई कमी, पर्यावरण क्षरण एवं पर्यावरणीय संरक्षात्मक पहल शामिल होती है) मौद्रिक मूल्य को घटाकर की जाती है।

हरित जी एन पी (Green GNP)

- एक दी हुई समयावधि में प्रति व्यक्ति उत्पादन की वह अधिकतम सम्भावी मात्रा है, जोकि देश की प्राकृतिक सम्पदा को स्थिर बनाए रखते हुए प्राप्त की जा सकती है।
- वर्ष 1995 में हरित GNP की अवधारणा का प्रारम्भ किया गया एवं इसमें अभी तक 192 देशों को शामिल किया गया है।

[हरित GNP → कुल वृद्धि-प्राकृतिक (पर्यावरणीय) ह्रास]

सकल पर्यावरण उत्पाद (Gross Environment Product)

- सकल पर्यावरण उत्पाद का तात्पर्य पर्यावरणीय परिणामों के साथ आर्थिक विकास सूचकांक तैयार करना है। यह सूचकांक बताता है कि आर्थिक विकास के लिए किसी देश ने अपनी जैव-विविधता को कितना नुकसान पहुँचाया अथवा उसमें पर्यावरण पर कितना प्रभाव पड़ा।

राष्ट्रीय आय मापने की विधियाँ (Methods to Calculate National Income)

- राष्ट्रीय आय साधन लागत पर आकलित निवल राष्ट्रीय उत्पाद है। इसकी लेखांकन सम्बन्धी अवधारणा सर्वप्रथम साइमन कुजनेट्स द्वारा प्रतिपादित की गई। *इन्होंने राष्ट्रीय आय को मापने की तीन विधियों को प्रस्तुत किया है*

उत्पाद पद्धति (Product Method)

- उत्पाद पद्धति को **वस्तु सेवा विधि** के नाम से भी जाना जाता है। इसके अन्तर्गत यह आकलन किया जाता है कि अन्तिम उत्पाद में प्रत्येक उद्योग ने अलग-अलग क्या योगदान दिया? इस पद्धति के अन्तर्गत सर्वप्रथम देश में एक वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य ज्ञात कर लेते हैं। इसके योग को बाजार मूल्य पर आधारित सकल घरेलू उत्पाद (GDP_{MP}) कहा जाता है। इसके आधार पर GDP_{FC} ज्ञात किया जाता है।

—$GDP_{FC} = GDP_{MP}$ – अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

पुन: GDP_{FC} से हम NDP_{FC} ज्ञात कर लेते हैं।

—$NDP_{FC} = GDP_{FC}$ – मूल्य ह्रास

पुन: NDP_{FC} से NNP_{FC} ज्ञात कर लेते हैं, जो **राष्ट्रीय आय** को व्यक्त करता है।

आय पद्धति (Income Method)

- आय पद्धति के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय का आकलन उत्पाद कारकों के लिए भुगतान के आधार पर किया जाता है। दूसरे शब्दों में, राष्ट्रीय आय की गणना के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों तथा व्यावसायिक उपक्रमों की शुद्ध आय का योग प्राप्त किया जाता है; जैसे अर्थात् सभी उत्पादन साधनों की आय का योग।

अत: राष्ट्रीय आय = कुल लगान-भूमि से प्राप्त आय + कुल मजदूरी-श्रम से प्राप्त आय + कुल ब्याज-पूँजी से प्राप्त आय + कुल लाभ-उद्यमी को प्राप्त आय

व्यय पद्धति (Consumption Method)

- व्यय विधि के अनुसार, कुल आय या तो उपभोग पर व्यय की जाती है अथवा बचत पर। अत: **राष्ट्रीय आय** कुल **उपभोग व्यय** तथा कुल **बचत** का योग होती है। इस विधि से आय की गणना के लिए उपभोक्ता की आय तथा उनकी बचत से सम्बन्धित आँकड़ों का होना आवश्यक होता है।
- भारत जैसे देश में राष्ट्रीय आय की गणना के लिए उत्पाद पद्धति तथा आय पद्धति के सम्मिश्रण का प्रयोग किया जाता है।

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना

- भारतीय राष्ट्रीय आय का सर्वप्रथम अनुमान वर्ष 1968 में दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक 'पॉवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया' में लगाया था। इसके अतिरिक्त शाह और खम्बत, फिण्डले शिराज, वाडिया एवं जोशी आदि ने भी राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाया था।
  इन लोगों ने गणना के लिए कृषि क्षेत्र के उत्पादन का मूल्य प्राप्त कर, इसमें एक निश्चित प्रतिशत कृषि भिन्न क्षेत्र (Non-agricultural Sector) के भाग के रूप में जोड़ दिया था। इन अनुमानों की मान्यताओं का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था।
- वर्ष 1931-32 में डॉ. वी. के आर वी राव ने सर्वप्रथम वैज्ञानिक विधि से राष्ट्रीय आय की गणना की तथा राष्ट्रीय आय लेखा प्रणाली का प्रतिपादन किया। इसी कारण राव को ''राष्ट्रीय आय लेखा प्रणाली का जनक'' माना जाता है। डॉ. राव ने उत्पादन गणना प्रणाली (Calculation of Production Method) और आय-गणना प्रणाली के सम्मिश्रण का प्रयोग किया था।
- स्वतन्त्रता-पूर्व काल में उपलब्ध आँकड़ों की विश्वसनीयता को ध्यान में रखते हुए डॉ. राव का अनुमान सबसे अधिक विश्वसनीय माना जाता है। राष्ट्रीय आय समिति और केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (Central Statistical Organisation) ने डॉ. राव की पद्धति में कुछ संशोधन कर उसे स्वीकार कर लिया।

हिन्दू वृद्धि दर (Hindu Growth Rate)

- हिन्दू वृद्धि दर का तात्पर्य भारतीय अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय अथवा वास्तविक वृद्धि दर से सम्बन्धित है। हिन्दू वृद्धि दर अवधारणा के प्रतिपादन प्रो. राज कृष्ण थे।
- आर्थिक सुधारों के प्रारम्भ होने से पूर्व 1950 के दशक के मध्य भारत की वार्षिक आर्थिक वृद्धि की दर 3.5% थी, इस वास्तविक आर्थिक वृद्धि दर को ही हिन्दू वृद्धि दर कहा गया।
- वर्ष 1950-80 के बीच यह वृद्धि दर 3 से 4% तक रही। पूर्व केन्द्रीय मन्त्री अरुण शौरी ने इस 3 से 4% वार्षिक वृद्धि दर को समाजवादी वृद्धि दर कहा।
- वर्ष 1991 में अपनाए गए उदारीकरण की नीति के पश्चात् भारत इस वृद्धि दर से बाहर निकलने में सफल रहा।

राष्ट्रीय आय की गणना से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ

राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित भारत के महत्त्वपूर्ण संगठन निम्नलिखित हैं

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय (MoSPI) भारत सरकार का एक मन्त्रालय है जो जारी किए गए आँकड़ों की कवरेज और गुणवत्ता पहलुओं से सम्बन्धित है। सांख्यिकी विभाग और कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग के विलय के पश्चात् 15 अक्टूबर, 1999 को सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय एवं स्वतन्त्र मन्त्रालय के रूप में अस्तित्व में आया। मन्त्रालय में दो स्कंध क्रमश: एक सांख्यिकी से सम्बन्धित है तथा दूसरा कार्यक्रम कार्यान्वयन से है।

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय ने केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय (CSO) और राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) का राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) में विलय करने का फैसला 23 मई, 2019 को किया है।

सांख्यिकी शाखा, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मन्त्रालय का एक अभिन्न हिस्सा होगा। इस सांख्यिकी शाखा में एनएसओ के साथ घटक के रूप में सीएसओ और एनएसएसओ शामिल होंगे। इसमें कहा गया है कि एनएसएसओ की अध्यक्षता सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन सचिव करेंगे।

केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यालय (सीएसओ) वृहद आर्थिक आँकड़े जैसे जीडीपी वृद्धि, औद्योगिक उत्पादन और मुद्रास्फीति आँकड़े जारी करता है। इसका प्रमुख महानिदेशक होता है। इसी प्रकार एनएसएसओ स्वास्थ्य शिक्षा, घरेलू खर्च और सामाजिक एवं आर्थिक सूचकांकों से जुड़ी रिपोर्ट पेश करता है और सर्वेक्षण कराता है। एनएसएसओ और सीएसओ स्वतन्त्र रूप से काम कर रहे हैं।
एनएसओ के निम्नलिखित चार प्रभाग हैं

(i) **सर्वेक्षण अभिकल्प और अनुसन्धान प्रभाग** (एसडीआरडी) यह प्रभाग कलकत्ता में स्थित है और सर्वेक्षणों की तकनीकी योजना तैयार करने, संकल्पनाएँ और परिभाषाएँ तैयार करने, अभिकल्प प्रतिदर्श तैयार करने, पूछताछ अनुसूचियाँ तैयार करने, तालिका योजना बनाने, सर्वेक्षण परिणामों के विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण के लिए जिम्मेदार है।

(ii) **फील्ड कार्य प्रभाग** (एफओडी) इस प्रभाग का मुख्यालय दिल्ली/फरीदाबाद में स्थित है और इसका 6 आंचलिक कार्यालयों, 49 क्षेत्रीय कार्यालयों और 118 उप-क्षेत्रीय कार्यालयों का नेटवर्क है, जो पूरे देश में फैला हुआ है। यह प्रभाग एनएसएसओ द्वारा किए जाने वाले सर्वेक्षणों के लिए प्राथमिक डाटा के संकलन के लिए जिम्मेदार है।

(iii) **डाटा संसाधन प्रभाग** (डीपीडी) इस प्रभाग का मुख्यालय कोलकाता में स्थित है और विभिन्न स्थानों में इसके 6 अन्य डाटा संसाधन केन्द्र हैं। यह प्रभाग प्रतिदर्श चयन, सॉफ्टवेयर विकास, संसाधन, सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्र किए जाने वाले डाटा के वैधीकरण और तालिका तैयार करने के लिए जिम्मेदार है।

(iv) **समन्वय और प्रकाशन प्रभाग** (सीपीडी) यह प्रभाग नई दिल्ली में स्थित है। यह प्रभाग एनएसएसओ के विभिन्न प्रभागों के सभी क्रियाकलापों का समन्वय करता है। यह 'सर्वेक्षण' नामक एनएसएसओ की छमाही पत्रिका का प्रकाशन भी करता है और एनएसएसओ द्वारा किए गए विभिन्न सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षणों के परिणामों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ भी आयोजित करता है।

केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (Central Statistical Organisation)

- 4 अगस्त, 1949 को केन्द्रीय सरकार द्वारा कलकत्ता स्थित इण्डियन स्टैटिस्टिकल इंस्टीट्यूट के प्रो. पी सी महालनोबिस की अध्यक्षता में एक **राष्ट्रीय आय समिति** नियुक्त की, जिसकी अनुशंसा पर राष्ट्रीय आय लेखा प्रणाली का ढाँचा व केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (CSO) की स्थापना की गई।

- केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (CSO) की स्थापना की घोषणा वर्ष 1949 में की गई। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। भारत में राष्ट्रीय आय और सम्बन्धित सभी पक्षों की गणना केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा की जाती है।
- CSO राष्ट्रीय आय के आकलन हेतु भारतीय अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों; प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक तथा 14 उप-क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, वन-क्षेत्र, मत्स्य क्षेत्र व खानें शामिल की जाती हैं। द्वितीयक क्षेत्र के दो प्रमुख अंग हैं- विनिर्माण (Manufacturing) तथा निर्माण (Construction)। तृतीयक क्षेत्र में व्यापार, परिवहन, संचार, बैंकिंग बीमा, स्थावर सम्पदा (Real Estate) तथा सामुदायिक एवं वैयक्तिक सेवाएँ शामिल की जाती हैं।

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO)

योजना तथा नीति-निर्माण में उपयोग हेतु राष्ट्रव्यापी प्रतिदर्श सर्वेक्षणों के द्वारा अर्थव्यवस्था के विविध क्षेत्रों पर आँकड़ों के संग्रह हेतु एक स्थायी सर्वेक्षण संगठन रखने के उद्देश्य से प्रो. पी सी महालनोबिस की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय आय समिति की अनुशंसाओं के अनुसरण में भारत सरकार द्वारा वर्ष 1950 में राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (National Sample Survey, NSS) की स्थापना की गई। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण निदेशालय को मार्च, 1970 के सरकारी संकल्प के अनुसार, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (National Sample Survey Organisation, NSSO) में पुनर्गठित कर दिया गया। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण सामान्यतः एक वर्ष की अवधि (जुलाई-जून) के लगातार दौरों के रूप में संचालित किया जाने वाला एक निरन्तर सर्वेक्षण कार्यक्रम है। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन को अब राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण ऑफिस कहा जाता है।

राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग
(National Statistical Commission)

- सी. रंगराजन समिति द्वारा वर्ष 2000 में दिए गए सुझाव के आधार पर 1 जून, 2005 को स्थायी सांख्यिकी आयोग गठित किया गया।
- 12 जुलाई, 2006 को प्रो. सुरेश तेन्दुलकर की अध्यक्षता में इसने (NSC) कार्य प्रारम्भ किया। राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग की स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) का कार्य लगभग समाप्त हो चुका है, किन्तु NSSO द्वारा आर्थिक सर्वेक्षण का कार्य अब भी जारी है।

भारत में राष्ट्रीय आय की प्रवृत्तियाँ
(Trends of National Income in India)

- वर्ष 1950 के बाद से भारत की राष्ट्रीय आय में क्षेत्रवार योगदान की प्रवृत्ति में लगातार परिवर्तन आया है।
- राष्ट्रीय आय में **प्राथमिक क्षेत्र** के योगदान में लगातार कमी होती जा रही है। वर्ष 2011-12 में राष्ट्रीय आय में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का हिस्सा घट चुका है। GDP में **द्वितीयक क्षेत्र** के योगदान में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है, परन्तु तृतीयक क्षेत्र की वृद्धि में तीव्रता दिखाई देती है।

आधार वर्ष 2011-12 के स्थिर मूल्यों पर 2020-21 में वृद्धि (प्रतिशत में)

उत्पाद	2019-20	2020-21
कृषि, वानिकी एवं मात्स्यिकी	4.3	3.6
खनन एवं उत्खनन	– 2.5	– 8.5
विनिर्माण	– 2.4	– 7.2
बिजली, गैस तथा जलापूर्ति	2.1	1.9
संरचना	1.0	– 8.6
व्यापार, होटल, परिवहन एवं संचार	6.4	– 18.2
वित्त पोषण, बीमा, स्थावर सम्पदा तथा व्यवसाय सेवाएँ	7.3	– 1.5
अन्य सेवाएँ	8.3	– 4.6
कुल GVA (साधन लागत पर)	4.1	– 6.2

स्रोत—राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (NSO)

सकल मूल्य योजित (Gross Value Added, GVA)

इसका अनुमान कारक लागत के सथान पर मूल कीमतों पर किया जाता है। सकल मूल्य योजित के माप को GDP में सब्सिडी से प्रत्यक्ष बिक्री कर को घटाकर प्रस्तुत करते हैं। वर्ष 2019-20 के दौरान स्थिर (आधार वर्ष 2011-12) मूल कीमतों पर सकल मूल्य योजित की वृद्धि दर 4.2% के स्तर पर अनुमानित है।

भारत में राष्ट्रीय आय का वितरण
(Distribution of National Income in India)

भारत में आय के वितरण की सीधी जाँच के लिए आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। सभी अध्ययनों में आयकर सम्बन्धी आँकड़ों के अतिरिक्त पारिवारिक संरक्षण द्वारा उपलब्ध आँकड़ों का प्रयोग किया जाता है।

वर्ष 1950-70 के दशक में आय का वितरण

- नेशनल काउन्सिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च के आँकड़ों के अनुसार, छठे व सातवें दशक में सबसे सम्पन्न 10% परिवारों का राष्ट्रीय आय में हिस्सा लगभग 35% तथा सबसे नीचे के 20% परिवारों का राष्ट्रीय आय में हिस्सा 8-9% के बीच था। इस समय व्यक्तिगत आय में असमानता ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्र में अधिक थी।

वर्ष 1970 से 1991 के दौरान आय का वितरण

- इस समय अन्तराल में औसतन सबसे निर्धन 20% लोगों का कुल वैयक्तिक आय में हिस्सा लगभग 7.5% था, जबकि सबसे सम्पन्न 20% लोगों का हिस्सा लगभग 47% था अर्थात् कुल आय का लगभग आधा सबसे सम्पन्न 20% लोगों के हाथ में था। आय के ऊपरी हिस्से में केन्द्रीकरण बहुत अधिक था, उदाहरण के लिए; सबसे धनी 10% लोगों के पास 30 से 35% (अर्थात् लगभग एक-तिहाई) आय थी।

वर्ष 1991 के आर्थिक सुधार के बाद

- 1980 के दशक की तुलना में आर्थिक सुधारों की अवधि में संवृद्धि दर थोड़ी ऊँची रही है और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में भी वृद्धि हुई है, लेकिन न तो इससे गरीबी की व्यापकता में कमी हुई है और न ही आय की असमानताएँ

कम हुई हैं, चूँकि आय में असमानताएँ व्यय में असमानताओं की तुलना में सामान्यत: अधिक होती हैं। इसका कारण यह है कि सबसे निर्धन 10 या 20% लोगों की बचतें नाममात्र होती हैं तथा अधिकतर बचतें सबसे धनी 20% लोगों द्वारा की जाती हैं।

आय वितरण में असमानता सम्बन्धी तथ्य

आय वितरण में असमानता के प्रमुख तथ्य निम्नलिखित हैं

डॉ. पी सी महालनोबिस का अध्ययन
(Study of Dr. PC Mahalanobis)

- डॉ. पी सी महालनोबिस ने बताया है कि देश के 14% परिवार कुल आय का 50% भाग प्राप्त करते हैं। सम्पत्ति का वितरण शहरों की अपेक्षा गाँवों में अधिक विषम है। 20% कृषक परिवार भूमिहीन हैं, जबकि उच्च श्रेणी के कृषकों के पास कृषि क्षेत्र का 40% भाग केन्द्रित है। शहरों में केवल 5% परिवारों के पास कुल शहरी सम्पत्ति का 52% है, जबकि 20% निचले वर्ग के पास कोई सम्पत्ति नहीं है।
- पूँजी के निर्माण, निम्नस्तरीय कार्यक्षमता और साहस की कमी के लिए आय तथा सम्पत्ति के वितरण की विषमता भी उत्तरदायी है।

वैयक्तिक असमानताएँ (Personal Inequalities)

- भारत की जनता में धन तथा आय के वितरण में अनेक असमानताएँ देखने को मिलती हैं। आयंगर और मुखर्जी के अनुमानों के अनुसार, राष्ट्रीय आय का लगभग 25% और 10% लोगों के पास चला जाता है, जबकि नीचे के 20% लोगों को राष्ट्रीय आय का कुल 8.5% भाग ही मिल पाता है।

ग्रामीण व शहरी असमानताएँ
(Rural and Urban Inequalities)

- ग्रामीण क्षेत्रों में सुख-सुविधाओं के विस्तार के बावजूद शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में उपभोग व्यय में भारी अन्तर बना हुआ है। देश में घरेलू उपभोक्ता व्यय के सम्बन्ध में राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन के 60वें सर्वेक्षण के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में उपभोक्ता व्यय ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में 88% अधिक है।

आयंगर और ब्रह्मानन्द का अनुमान

- एन एस आयंगर और पी आर ब्रह्मानन्द ने पहली पंचवर्षीय योजना से लेकर छठी पंचवर्षीय योजना तक की अवधि में मौद्रिक प्रति व्यक्ति पारिवारिक निजी उपभोग व्यय के परिणाम वितरण (Size Distribution of Nominal per-capita Household Private Consumption Expenditure) के लिए गिनी लॉरेन्ज अनुपातों की गणना की है। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के उपभोग के आँकड़ों का सहारा लिया है।

प्रादेशिक असमानताएँ (Regional Inequalities)

- देश के विभिन्न राज्यों में जिस प्रकार से जनसंख्या के घनत्व में भिन्नता है, ठीक उसी प्रकार आय वितरण में भी भारी असमानताएँ देखने को मिलती हैं। भारत में दिल्ली की प्रति व्यक्ति आय सर्वाधिक, जबकि बिहार की प्रति व्यक्ति आय सबसे कम है।
- किसी भी देश की घरेलू सीमा की अवधारणा का सम्बन्ध राष्ट्रीय सीमा से न होकर देश की समस्त राजनीतिक सीमा (समुद्री सीमा सहित) से है। इसके अन्तर्गत दो देशों के बीच चलने वाले जलयान व वायुमान भी आते हैं।
- किसी भी देश की घरेलू सीमा, उसकी राजनीतिक सीमा से कहीं अधिक विस्तृत होती है, क्योंकि यह स्वामित्व को नहीं, बल्कि क्रियाशीलता को सूचित करता है।
- भारत में प्रति व्यक्ति आय का स्तर बहुत ही निम्न है, वैश्विक मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार, भारत का प्रति व्यक्ति GNI विकसित देशों के 1/10वें भाग से भी कम है।

भारत में आय असमानता के कारण
(Reasons of Income Disparity in India)

- ग्रामीण क्षेत्र में भूमि के स्वामित्व में असमानताएँ तथा दृश्य सम्पदा का केन्द्रीकरण।
- उद्योगों, व्यापार व भवनों का निजी स्वामित्व।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण में असमानताएँ।
- उत्तराधिकार का नियम।
- स्फीति और कीमत वृद्धि।
- बढ़ती हुई बेरोजगारी।
- बैंकों व वित्तीय संस्थाओं की साख नीति तथा सरकार की लाइसेन्स नीति।
- निजी निवेश में शहरी पूर्वाग्रह।
- सरकार की भूमिका।
- रोजगार और मजदूरी नीति।

असमानता निवारण के उपाय
(Measures to Eradicate Inequality)

असमानता निवारण हेतु निम्न उपाय किए जाने चाहिए

—देश में रोजगार के अवसरों में वृद्धि की जानी चाहिए।
—भूमिहीन लोगों को कृषि भूमि का वितरण किया जाए।
—प्रत्येक राज्य की विकास दर में समानता लाई जाए।
—प्रत्येक देश में न्यूनतम मजदूरी का पालन सख्ती से कराया जाए।
—कर प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाया जाए।

भारत में राष्ट्रीय आय के आकलन की सीमाएँ

- *भारत में राष्ट्रीय आय के आकलन में निम्नलिखित सीमाएँ देखी गई हैं*

—राष्ट्रीय उत्पाद मापते समय साधारणतया यह मान लिया जाता है कि उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मुद्रा से विनियम होता है। भारत में जहाँ निर्वाह कृषि की जाती है, उपज का काफी भाग विक्रय के लिए बाजार में नहीं आ पाता। इस भाग को उत्पादक या तो उपभोग के लिए रख लेते हैं या अन्य वस्तुओं और सेवाओं के विनियम में उसे दूसरे उत्पादकों को दे देते हैं। ऐसे उत्पादों का अनुमानित मूल्य जोड़ा जाता है। भारत में असंगठित क्षेत्र में अनेक लघु, कुटीर एवं घरेलू उत्पादक हैं, जो लेखा (Account) नहीं बनाते हैं। अत: इनकी वास्तविक आय को लेकर एक अनुमानित आय को ही जोड़ा जाता है।

—भारत में उद्योगों के अनुसार, राष्ट्रीय आय के आँकड़े शामिल करने की प्रवृत्ति है। इस प्रकार यह आवश्यक है कि उत्पादकों को विभिन्न व्यवसाय वर्गों में रखा जाए। उदाहरण के लिए; एक कृषि श्रमिक वर्ष का कुछ समय खेती में, कुछ और उद्योग में, कुछ ताँगा चलाने में लगा सकता है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय आय को विभिन्न व्यवसायों में बाँटना कठिन होगा।

—भारत में काले धन के बारे में सार्वजनिक वित्त एवं नीति संस्थान के अनुसार, काली आय 18-21% है, जो काली अर्थव्यवस्था के रूप में कार्य करती है। यह आय रिपोर्ट नहीं की जाती। इस कारण राष्ट्रीय आय की गणना त्रुटिपूर्ण हो जाती है।

—विश्वसनीय आँकड़ों का अभाव; जैसे—फसलों के अधीन 80% आँकड़ों की अनुपलब्धता है, साथ ही फलों और सब्जियों से सम्बन्धित आँकड़े नियमित रूप से प्राप्त नहीं किए जाते। उद्योग क्षेत्र में लगभग 10% इकाइयाँ अपने आँकड़े नहीं भेजती हैं। इन सब कारणों से राष्ट्रीय आय की गणना त्रुटिपूर्ण हो जाती है।

आधार वर्ष : राष्ट्रीय आय आकलन का आधार

राष्ट्रीय आय के आकलन की नई श्रृंखला, जिसका आधार वर्ष (Base Year) 2011-12 है, का आरम्भ 30 जनवरी, 2015 को किया गया। आरम्भ में (1948-49 से 1964-65) राष्ट्रीय आय के अनुमान को वर्ष 1948-49 के आधार वर्ष पर व्यक्त किया गया था। *इसके बाद अब तक राष्ट्रीय आय की गणना की 7 श्रृंखलाएँ आरम्भ की जा चुकी हैं*

1. वर्ष 1960-61
2. वर्ष 1970-71
3. वर्ष 1980-81
4. वर्ष 1993-94
5. वर्ष 1999-2000
6. वर्ष 2004-05
7. वर्ष 2011-2012

आरम्भ में राष्ट्रीय आय के अनुमान को वर्ष 1948-49 के आधार पर व्यक्त किया गया था। वर्तमान में गणना की नई श्रृंखला का आधार वर्ष 2011-12 है। इसका आरम्भ 31 जनवरी, 2015 को किया गया है। सांख्यिकी मन्त्रालय अब राष्ट्रीय लेखे-जोखे की गणना के लिए आधार वर्ष को वर्ष 2011-12 से बदलकर वर्ष 2017-18 करने वाली है।

उपरोक्त श्रृंखला को **कन्वेन्शनल सीरीज** कहते हैं। इसके अन्तर्गत भारतीय अर्थव्यवस्था को 13 उप-क्षेत्रों में विभाजित किया गया था, जिसके अन्तर्गत आय तथा उत्पाद विधि को राष्ट्रीय आय के आकलन में प्रयोग किया गया। वर्तमान समय में राष्ट्रीय आय के आकलन के सन्दर्भ में 6 क्षेत्र तथा 14 उप-क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है।

राष्ट्रीय आय के आकलन से सम्बन्धित 6 प्रमुख क्षेत्र तथा उनका विभाजन *निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है*

1. **प्राथमिक क्षेत्र** कृषि, वानिकी और लट्ठा, मत्स्यपालन, खनन तथा उत्खनन।
2. **द्वितीयक क्षेत्र**
   (i) विनिर्माण (गैर-पंजीकृत भी), बिजली, गैस और जल आपूर्ति।
   (ii) निर्माण
3. **परिवहन एवं संचार** परिवहन, भण्डारण और संचार, व्यापार, होटल और रेस्तराँ।
4. **वित्त एवं वास्तविक सम्पदा** बैंकिंग एवं बीमा, वास्तविक सम्पदा, भवनों का स्वामित्व तथा व्यावसायिक सेवाएँ।
5. **सामुदायिक एवं निजी सेवाएँ** सार्वजनिक प्रशासन एवं सुरक्षा तथा अन्य सेवाएँ।
6. **विदेशी क्षेत्र** विदेशी व्यवहार के अन्तर्गत 1 से 5 के सन्दर्भ में उत्पाद विधि अथवा मूल्यवर्द्धक विधि का प्रयोग किया जाता है।

उपरोक्त क्षेत्र में निर्माण को छोड़कर शेष अन्य क्षेत्रों में आय विधि प्रयुक्त की जाती है। निर्माण क्षेत्र के अन्तर्गत वस्तु तथा प्रवाह विधि का प्रयोग किया जाता है।

भारत में राष्ट्रीय आय के नवीनतम आँकड़े

सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) ने 30 मई, 2021 को वित्त वर्ष 2020-21 के लिए राष्ट्रीय आय के अन्तिम अनुमान तथा स्थिर मूल्यों (2011-12) और वर्तमान मूल्यों दोनों पर ही 2020-21 के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) अनुमान जारी कर दिए।

आईआईपी और डब्ल्यूपीआई की नई सीरीज के साथ-साथ आईआईपी और डब्ल्यूपीआई की पुरानी सीरीज के आधार पर वर्ष 2011-12 से लेकर वर्ष 2020-21 तक के लिए जीडीपी वृद्धि दरों का उल्लेख नीचे किया गया है :

वर्तमान मूल्यों पर			स्थिर मूल्यों पर		
वर्ष	जीडीपी वृद्धि दरें (%)		वर्ष	जीडीपी वृद्धि दरें (%)	
	पुरानी	नई		पुरानी	नई
2012-13	13.9	13.8	2012-13	5.5	5.5
2013-14	13.0	13.0	2013-14	6.5	6.4
2014-15	10.7	10.8	2014-15	7.2	7.5
2015-16	10.0	9.9	2015-16	7.9	8.0
2016-17	9.8	10.1	2016-17	7.1	6.6
2017-18	10.0	9.7	2017-18	6.7	6.5
			2018-19	—	6.1
			2019-20	—	4.2
			2020-21	—	– 7.2

वर्तमान मूल्यों पर

वर्ष 2021-22 में वर्तमान मूल्यों पर जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) बढ़कर ₹ 135.13 लाख करोड़ की तुलना में ₹ 203.40 लाख करोड़ के स्तर पर पहुँच गया है।

स्थिर (2011-12) मूल्यों पर अनुमान

वर्ष 2019-20 में स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वास्तविक जीडीपी अथवा सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) बढ़कर ₹ 145.66 लाख करोड़ रुपये हो जाने का अनुमान लगाया गया। यह वर्ष 2018-19 में यह ₹ 139.81 लाख करोड़ होने का अनुमान लगाया गया।

वर्ष 2019-20 के दौरान सकल राष्ट्रीय आय में 4.2% की वृद्धि होने का अनुमान लगाया गया। वर्ष 2020-21 के दौरान सही अर्थों में (2011-12 मूल्यों पर) प्रतिव्यक्ति आय बढ़कर ₹ 85,929 (स्थिर कीमतों पर) के स्तर पर पहुँच जाने की सम्भावना है, जो वर्ष 2019-20 में ₹ 94,954 थी।

राष्ट्रीय आय की गणना का महत्त्व

- राष्ट्रीय आय की गणना के माध्यम से अर्थव्यवस्था की स्थिति की स्पष्ट जानकारी मिलती है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों की वास्तविक स्थिति का पता चलता है। उपरोक्त जानकारी के माध्यम से नीति निर्माताओं को सटीक व व्यवस्थित योजना बनाने में मदद मिलती है।
- राष्ट्रीय आय की गणना का महत्त्व इस बात में भी है कि इसके माध्यम से अर्थव्यवस्था में सन्तुलन स्थापित करने व विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्राथमिकताओं का निर्माण किया जाता है।
- राष्ट्रीय आय की गणना से योजनाओं के लक्ष्य निर्धारण का अनुमान लगाने में सहायता मिलती है तथा सरकार के राजस्व प्राप्ति व व्यय का खाका बनाया जा सकता है।

सेल्फ चैक

बढ़ाएँ आत्मविश्वास...

1. भारत में राष्ट्रीय आय के प्राक्कलन तैयार किए जाते हैं **[UPPCS 2012]**

(a) भारतीय विकास परिषद् द्वारा *(b)* भारतीय उत्पादकता परिषद् द्वारा
(c) भारतीय आय समिति द्वारा *(d)* केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन द्वारा

2. निम्न कारणों में कौन-से कारण भारत की वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में धीमी बढ़त के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी रहे? **[UPPCS (Pre) 2011]**

1. जनसंख्या में तेजी से बढ़त
2. मूल्यों में भारी बढ़त
3. कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्रों के विकास में भी धीमी गति
4. विदेशी विनिमय की अनुपलब्धता

कूट

(a) 1 और 2 *(b)* 1, 2 और 3 *(c)* 1 और 4 *(d)* ये सभी

3. यदि एक दी हुई समयावधि में कीमतें तथा मौद्रिक आय दोनों दोगुनी हो जाएँ, तो वास्तविक आय **[UPPCS (Mains) 2004]**

(a) दोगुनी हो जाएगी *(b)* आधी रह जाएगी
(c) अपरिवर्तित रहेगी *(d)* इनमें से कोई नहीं

4. दक्षिण एशिया के किस देश ने 'सकल राष्ट्रीय प्रसन्नत' को अपने नागरिकों की 'कुशल क्षेम' को सूचकांक के रूप में माना है? **[UPPCS (Mains) 2009]**

(a) भारत *(b)* भूटान
(c) श्रीलंका *(d)* म्यांमार

5. राष्ट्रीय आय की अवधारणाओं के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद/बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद
2. बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद/मूल्य ह्रास
3. बाजार कीमत/मूल्य ह्रास
4. साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद/बाजार कीमत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद शुद्ध प्रत्यक्ष कर

उपरोक्त कथनों में कौन-से कथन सही हैं?

(a) 1 और 2 *(b)* 1 और 3
(c) 2 और 3 *(d)* 2 और 4

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. प्रो. महालनोबिस की अध्यक्षता में राष्ट्रीय आय समिति का गठन वर्ष 1949 में किया गया।
2. इस समिति के सलाहकार सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैरड और डोमर थे।
3. राष्ट्रीय आय समिति ने अपनी पहली रिपोर्ट वर्ष 1951 में पेश की, जिसके अनुसार, 1948-49 में भारत की राष्ट्रीय आय ₹ 8,650 करोड़ तथा प्रति व्यक्ति आय ₹ 246.9 थी।
4. इस समिति के दो अन्य सदस्य पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा बी. नटराजन थे।

उपरोक्त कथनों में कौन-से कथन सही हैं?

(a) 1 और 2 *(b)* 1 और 3
(c) 2 और 3 *(d)* 2 और 4

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की स्थापना वर्ष 1951 में की गई।
2. CSO सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मन्त्रालय का एक भाग है।
3. भारत में राष्ट्रीय आय का अनुमान NSSO द्वारा किया जाता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) 1 और 2 *(b)* केवल 2
(c) केवल 3 *(d)* 1, 2 और 3

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

1. निजी आय वह आय है, जो निजी क्षेत्र को सभी स्रोतों से प्राप्त होने वाली साधन आय तथा सरकार से प्राप्त वर्तमान हस्तान्तरण का योग है।
2. वैयक्तिक आय किसी देश के व्यक्तियों एवं परिवारों के एक लेखा वर्ष में सभी स्रोतों से वास्तव में प्राप्त साधन आय वर्तमान हस्तान्तरण भुगतान का योग है।
3. वैयक्तिक आय = निजी आय – अवितरित लाभ + निगम कर
4. वैयक्तिक आय = निजी आय + अवितरित लाभ – निगम कर

उपरोक्त कथनों में कौन-से कथन सही हैं?

(a) 1 और 2 *(b)* 1 और 3 *(c)* 2 और 3 *(d)* 2 और 4

9. पद 'राष्ट्रीय आय' निरूपित करता है

(a) बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद, मूल्य ह्रास घटाकर
(b) बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद, मूल्य ह्रास घटाकर विदेश से प्राप्त निवल कारक आय जोड़कर
(c) बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद, मूल्य ह्रास और अप्रत्यक्ष करों को घटाकर, सब्सिडी जोड़कर
(d) बाजार कीमतों पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद, विदेश से प्राप्त निवल कारक आय घटाकर

10. किसी देश की कर से GDP की अनुपात में कमी क्या सूचित करती है? **[IAS 2015]**

1. आर्थिक वृद्धि दर का धीमा होना
2. राष्ट्रीय आय का कम साम्यिक वितरण

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं

(a) केवल 1 *(b)* केवल 2
(c) 1 और 2 *(d)* इनमें से कोई नहीं

11. किसी दी गई अवधि के लिए एक देश की राष्ट्रीय आय **[IAS 2013]**

(a) नागरिकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मूल्य के बराबर होगी
(b) कुल उपभोग एवं निवेश व्यय के योग के बराबर होगी
(c) सभी व्यक्तियों की वैयक्तिक आय के योग के बराबर होगी
(d) उत्पादित अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के बराबर होगी

1. (d) **2.** (b) **3.** (c) **4.** (d) **5.** (d) **6.** (b) **7.** (a) **8.** (b) **9.** (c) **10.** (b) **11.** (d)

अध्याय चार
भारत में आर्थिक नियोजन

''आर्थिक नियोजन अपने आप में सामाजिक नियोजन की अवधारणा को ही निरूपित करता है। वर्तमान समय में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के अन्तर्गत आर्थिक नियोजन का उद्देश्य समाज की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना है। इसका एक उद्देश्य यह भी है कि सीमित परिमाण में उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम सम्भव उपयोग किया जाए।''

आर्थिक नियोजन : एक परिचय

- आर्थिक नियोजन (Economic Planning) एक संगठित आर्थिक प्रयास है, जिसमें राज्य एक निश्चित अवधि में सुनिश्चित आर्थिक एवं सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्राकृतिक और आर्थिक संसाधनों तथा मानवीय संसाधनों का विवेकपूर्ण ढंग से समन्वय एवं नियन्त्रण किया जाता है।
- वर्ष 1930 की महामन्दी के पश्चात् नियोजन की अवधारणा लोकप्रिय हुई; क्योंकि महामन्दी ने पूँजीवाद की कमजोरियों को उजागर कर दिया, क्योंकि पूँजीवाद की मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था ने व्यापक स्तर पर बेरोजगारी, गरीबी, आय की असमानता और इसके सामाजिक साध्यों के प्रति घोर उपेक्षा की स्थिति को जन्म दिया।
- इन सभी कारकों ने अर्थशास्त्रियों को इसका विकल्प ढूँढने के लिए बाध्य किया। इसी के फलस्वरूप सर्वप्रथम USSR में वर्ष 1928 में आर्थिक नियोजन को अपनाया गया और इसके बाद भारत ने भी इसका अनुसरण किया।

नियोजन के उद्देश्य

- संसाधनों का सही वितरण सुनिश्चित करना।
- निर्धनता के चक्र को समाप्त करना।
- बेरोजगारी को दूर करना।
- आधारभूत संरचना का विकास करना।
- कृषि एवं उद्योग का समन्वित विकास करना।
- सामाजिक न्याय के साथ विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना।
- राजनीतिक लोकतन्त्र के साथ-साथ आर्थिक लोकतन्त्र की भी स्थापना करना।

नियोजन के प्रकार (Types of Planning)

नियोजन को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है

राज्य और बाजार के अन्तर्सम्बन्ध के आधार पर

इसके अन्तर्गत नियोजन के निम्नलिखित स्वरूप आते हैं

आदेशात्मक नियोजन (Imperative Planning)

- इस नियोजन में राज्य की भूमिका आदेशात्मक व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। इस मॉडल में केन्द्रीय स्तर एक शीर्ष संस्था होती है, जो योजना निर्माण एवं उसके क्रियान्वयन को सुनिश्चित करती है। इस मॉडल में निर्णय प्रक्रिया केन्द्रीकृत होती है।

निर्देशात्मक नियोजन (Directional Planning)

- इसमें राज्य द्वारा योजना के लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है और उसे प्राप्त करने की जिम्मेदारी निजी क्षेत्र और बाजार शक्तियों को सौंपी जाती है, इसमें राज्य की भूमिका केवल प्रेरणादायक और प्रोत्साहक की होती है।

प्रक्रिया के आधार पर

इसके आधार पर नियोजन के दो निम्नलिखित स्वरूप इस प्रकार हैं

केन्द्रीकृत नियोजन (Centralised Planning)

- केन्द्रीकृत नियोजन में योजना को पूरा करने आदि का उत्तरदायित्व एक केन्द्रीय संगठन पर होता है और इस सन्दर्भ में तमाम निर्णय उसके द्वारा खुद लिए जाते हैं। सामान्यत: आदेशात्मक नियोजन को केन्द्रीकृत नियोजन कहा जाता है।

विकेन्द्रीकृत नियोजन (Decentralised Planning)

- इसमें सरकार, स्थानीय निकाय, व्यक्तिगत उद्यमी आदि मिलकर योजना सम्बन्धी निर्णय लेते हैं। इसे हम नीचे से ऊपर की ओर नियोजन भी कहते हैं।
- भारत में वर्ष 1993 में 73-74वें संविधान संशोधन के द्वारा स्थानीय संस्थाओं को संवैधानिक स्वरूप प्रदान करते हुए विकेन्द्रीकृत नियोजन की दिशा में बढ़ने का प्रयास किया गया है। इसे नीतिगत नियोजन या निर्देशात्मक नियोजन भी कहते हैं।

अवधि के आधार पर

दीर्घावधिक नियोजन (Perspective Planning)

- एक लम्बे समय के लिए योजना के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों तथा रणनीतियों का निर्धारण दीर्घावधिक नियोजन कहलाता है; जैसे—विजन 2020, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000

अनवरत योजना (Rolling Plan)

- इसके तहत दीर्घकाल के लिए योजनाओं के लक्ष्यों और रणनीतियों का निर्धारण किया जाता है और वार्षिक आधार पर उसका मूल्यांकन करते हुए संशोधित लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है, जिससे निश्चित समय सीमा के भीतर लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। भारत में वर्ष 1978 में जनता पार्टी सरकार द्वारा अनवरत योजना (Rolling Plan) शुरू की गई थी। बजट भी एक वार्षिक वित्तीय विवरण है।

अल्पकालिक नियोजन (Short Term Planning)

- सामान्यत: वार्षिक आधार पर योजना के लक्ष्यों और रणनीतियों का निर्धारण करना ही अल्पकालिक योजना कहलाती है, इसकी अवधि तीन या चार वर्ष की अवधि तक भी हो सकती है।

क्षेत्र के आधार पर

राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय नियोजन (National and Regional Planning)

- केन्द्रीय संस्था द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर बनाई गई योजना को राष्ट्रीय योजना, जबकि क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखकर बनाई गई योजना को क्षेत्रीय योजना कहा जाता है।

नियोजन के तत्त्व

एक प्रभावी नियोजन के लिए निम्नलिखित तत्त्वों का होना आवश्यक है

—आँकड़ों की उपलब्धता
—आर्थिक आधारभूत संरचना की उपलब्धता
—दक्ष प्रशासन की उपलब्धता
—व्यापक जन भागीदारी
—कुशल संस्थान

योजना आयोग (Planning Commission)

- स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने वर्ष 1947 में पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में आर्थिक कार्यक्रम समिति का गठन किया। इस समिति ने 25 जनवरी, 1948 को अपने एक प्रस्ताव में यह सिफारिश की कि देश में एक स्थायी योजना आयोग की स्थापना होनी चाहिए।
- इसके फलस्वरूप 15 मार्च, 1950 को योजना आयोग का गठन किया गया, जिसकी अनुशंसा पर प्रथम पंचवर्षीय योजना 1 अप्रैल, 1951 से लागू हुई। विश्व में सबसे पहले सोवियत संघ ने वर्ष 1928 में पंचवर्षीय योजना को प्रारम्भ किया। योजना आयोग भारत में एक शक्तिशाली परामर्शदाता अभिकरण था। वर्तमान में योजना (2015 से) आयोग की जगह 'नीति आयोग' ने ले ली है।

'नियोजन' विशिष्ट तथ्य

- एम विश्वेश्वरैया द्वारा 'प्लैण्ड इकोनॉमी फॉर इण्डिया' नामक पुस्तक लिखी गई। इस पुस्तक में वर्ष 1934 में भारत के 10 वर्षीय नियोजित विकास के लिए कार्यक्रम निर्धारित किया गया था।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय नियोजन समिति का गठन वर्ष 1938 में किया।
- वर्ष 1944 में मुम्बई के 8 उद्योगपतियों द्वारा **बॉम्बे प्लान** नाम से एक 15 वर्षीय योजना को प्रस्तुत किया गया।
- वर्ष 1944 में श्रीमन्नारायण ने गाँधीवादी योजना नाम से एक योजना का निर्माण किया। इसी प्रकार श्री एम एन राय द्वारा अप्रैल, 1945 में **जन योजना** निर्मित की गई।
- जनवरी, 1950 में श्री जयप्रकाश नारायण ने **सर्वोदय योजना** के नाम से एक योजना प्रकाशित की, जिसके कुछ अंश को सरकार ने स्वीकार कर लिया। 15 मार्च, 1950 को भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा **योजना आयोग** का गठन हुआ।
- विश्व में सबसे पहले सोवियत संघ ने वर्ष 1928 में पंचवर्षीय योजना का प्रारम्भ किया।

नीति आयोग (NITI Aayog)

- 65 वर्ष पुराने योजना आयोग को नया रूप तथा नाम देते हुए नेशनल इन्स्टीट्यूट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इण्डिया (National Institute for Transforming India, NITI) आयोग के गठन की घोषणा 1 जनवरी, 2015 को की गई। 15 अगस्त, 2014 को देश के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर अपने सम्बोधन में योजना आयोग को समाप्त कर नई संस्था गठित करने की बात कही थी। नीति आयोग की अध्यक्षता प्रधानमन्त्री करेंगे।
- नीति आयोग की मुख्य भूमिका राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के विभिन्न नीतिगत मुद्दों पर केन्द्र तथा राज्य सरकारों को जरूरी रणनीतिक तथा तकनीकी परामर्श देने की होगी। आयोग के लिए 13 सूत्री उद्देश्य रखे गए हैं।
- इस आयोग में राज्य के मुख्यमन्त्रियों तथा निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों को अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका दी गई है, जो संघीय ढाँचे को मजबूत करेगी, जबकि 'योजना आयोग' में केन्द्रीयता को महत्त्व दिया गया था।

नीति आयोग की संरचना

नीति आयोग की अध्यक्षता प्रधानमन्त्री द्वारा की जाती है। *इसकी संरचना निम्न प्रकार की बनाई गई है*

अध्यक्ष	प्रधानमन्त्री
गवर्निंग काउन्सिल	सभी मुख्यमन्त्री, केन्द्रशासित प्रदेशों के राज्यपाल/प्रशासक
विशेष आमन्त्रित सदस्य	विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ (प्रधानमन्त्री द्वारा नामित)
उपाध्यक्ष	प्रधानमन्त्री द्वारा नियुक्त किया जाएगा
पूर्णकालिक सदस्य	इनकी संख्या पाँच होगी
अंशकालिक सदस्य	दो पदेन सदस्य तथा विश्वविद्यालयों के शिक्षक क्रम के अनुसार
पदेन सदस्य	चार केन्द्रीय मन्त्री
सीईओ	केन्द्र के सचिव स्तर का अधिकारी, जिसे निश्चित कार्यकाल के लिए नियुक्त किया जाएगा
क्षेत्रीय परिषद्	विशेष उद्देश्यों हेतु गठित की जाएगी। इसकी अध्यक्षता समूह के मुख्यमन्त्री क्रमानुसार करेंगे।

नीति आयोग के सदस्य (वर्तमान स्थिति)

पद	नाम
उपाध्यक्ष	राजीव कुमार (अर्थशास्त्री)
मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO)	अमिताभ कांत
पूर्णकालिक सदस्य	डॉ. वी. के. सारस्वत (पूर्व सचिव रक्षा आर एण्ड डी), रमेश चन्द (कृषि विशेषज्ञ) एवं डॉ. वी. के. पॉल (प्रोफेसर)
पदेन सदस्य	श्री राजनाथ सिंह (केन्द्रीय मन्त्री) श्रीमती निर्मला सीतारमण (केन्द्रीय मन्त्री) श्री अमित शाह (केन्द्रीय मन्त्री) नरेन्द्र सिंह तोमर (केन्द्रीय मन्त्री)
विशेष आमन्त्रित सदस्य	श्री नितिन गडकरी (सड़क परिवहन मन्त्री और राजमार्ग मंत्री, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री) श्री थावरचंद गहलोत (केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्री) श्री पीयूष गोयल (रेलमन्त्री तथा वाणिज्य और उद्योग मन्त्री) श्री राव इंद्रजीत सिंह (राज्यमन्त्री स्वतंत्र प्रभार)

नीति आयोग एवं योजना आयोग में अन्तर

नीति आयोग	योजना आयोग
इस आयोग की मुख्य भूमिका राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व के विभिन्न नीतिगत मुद्दों पर केन्द्र और राज्य सरकारों को जरूरी रणनीतिक व तकनीकी परामर्श देना होगा।	योजना आयोग की प्रकृति केन्द्रीयकृत थी।
नीति आयोग मोदी सरकार के टीम इण्डिया और सहकारी संघवाद के विचार का मूर्तरूप होगा।	योजना आयोग देश के विकास से सम्बन्धित योजनाएँ बनाने का काम करता था। योजना आयोग ने 12 पंचवर्षीय योजनाएँ बनाईं।
नीति आयोग में देशभर के शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों से व्यापक स्तर पर परामर्श लिए जाएँगे।	योजना आयोग के अध्यक्ष भी प्रधानमन्त्री ही होते थे, लेकिन कभी भी मुख्यमन्त्रियों से सलाह नहीं ली जाती थी।
नीति आयोग में विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के प्रतिनिधि भी शामिल किए जाएँगे।	मुख्यमन्त्री यदि कोई सुझाव देना चाहते थे, तो वे विकास समिति को देते थे, जो समीक्षा के बाद योजना आयोग को दी जाती थी। निजी क्षेत्र की भागीदारी योजना आयोग में नहीं थी।

नीति आयोग के उद्देश्य

- सशक्त राज्य से सशक्त राष्ट्र का निर्माण, सहकारी संघवाद को समृद्ध करना।
- ग्राम स्तर पर योजनाएँ बनाने के तन्त्र को विकसित करना।
- राष्ट्रीय सुरक्षा के हितों तथा आर्थिक नीति में तालमेल।
- आर्थिक प्रगति से वंचित रहे वर्गों पर विशेष ध्यान देना।
- रणनीतिक और दीर्घावधि के लिए नीति तथा कार्यक्रमों का ढाँचा तैयार करना।

नीति आयोग के कार्य

नीति आयोग की निम्नलिखित भूमिका अथवा कार्य तय किए गए हैं

- **सहकारी और प्रतिस्पर्द्धा संघवाद** नीति आयोग, सहकारी संघवाद के लिए प्राथमिक मंच के रूप में कार्य करने के साथ-साथ प्रधानमन्त्री एवं मुख्यमन्त्रियों के संयुक्त प्राधिकार में, राज्यों के सक्रिय सहयोग से राष्ट्रीय नीति बनाकर परिमाणात्मक एवं गुणात्मक लक्ष्यों के साथ इसे समयबद्ध रूप से लागू करने को प्रतिबद्ध होगा।
- **केन्द्र में राज्य के सबसे अच्छे मित्र के रूप में** राज्यों को स्वयं की चुनौतियों से जूझने में सहायता प्रदान करने के साथ-साथ तुलनात्मक लाभों एवं शक्ति-निर्माण की ओर ले जाना।
- **विशेषज्ञों के तन्त्र के रूप में** राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों की सहायक मण्डली, पेशेवर एवं अन्य साझीदारों के माध्यम से मुख्यधारा के बाहरी विचारों तथा विशेषज्ञता को सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों के प्रयोग में लाना।
- **मतभेद समाधान में** केन्द्र-राज्य, अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तर्क्षेत्रीय के साथ-साथ अन्तर्विभागीय समस्याओं के दल में सहायता प्रदान करने वाले एक ऐसे सहयोगी मंच के रूप में कार्य करना जो सभी के लिए लाभदायक एवं मान्य सामान्य को पारदर्शिता एवं त्वरित रूप से लागू करने के लिए आम सहमति तैयार करे।
- **शासन क्षेत्र की रणनीतियाँ बनाने में** केन्द्र एवं राज्य सरकारों के मन्त्रालयों को उनकी विकास योजना तैयार करने तथा समस्या समाधान सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए विशेषज्ञ कोष के एक और एक से अधिक समूह निर्माण द्वारा सहायक की भूमिका का निर्वहन करना।
- **विचारों को फैलाने के माध्यम के रूप में** वस्तुनिष्ठ आलोचनाओं एवं व्यापक प्रतिविचारों द्वारा सरकारी कार्यकलापों एवं स्थितियों में तेजी लाने के रूप में कार्य करना।

पंचवर्षीय योजना की समाप्ति

- केन्द्र में सत्तारूढ राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन (NDA) सरकार ने योजना आयोग का समाप्त करने के पश्चात् अब पंचवर्षीय योजनाओं को समाप्त करने की घोषणा की। इसके स्थान पर 15 वर्षीय 'नेशनल डेवलपमेण्ट विजन' को बनाया गया है जिसकी प्रत्येक तीसरे वर्ष समीक्षा होगी। इस प्रकार 12वीं पंचवर्षीय योजना अन्तिम पंचवर्षीय योजना होगी।

15 साल का विजन डाक्यूमेंट

- प्रधानमन्त्री कार्यालय (पीएमओ) ने नीति आयोग को वर्ष 2030 तक के लिए 15 साल का दृष्टि पत्र बनाने का कार्य सौंपा है। यह सतत विकास लक्ष्य के साथ समाप्त होगा। यह 15 साल की सम्भाव्य योजना होगी।
- नीति आयोग विकास के लिए 15 साल के विजन प्रोग्राम, 7 साल की मीडियम टर्न स्ट्रैटजी और 3 साल के एक्शन प्लान पर काम कर रहा है। इनमें पहला 15 वर्षीय विजन डॉक्यूमेंट है, जिसमें प्रस्तावित सामाजिक लक्ष्यों और वैश्विक सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को ध्यान में रखा जाएगा। दूसरा 2017-18 से 2023-24 तक की यानी

सात वर्षीय रणनीति है। इसके तहत सरकार के दीर्घकालिक दृष्टिकोण को विकास एजेंडा के एक हिस्से के तौर पर क्रियान्वयन वाली नीति और कार्रवाई में बदलेगा। इसे राष्ट्रीय विकास एजेंडा कहा जाएगा और आधी समयावधि यानी करीब तीन साल बीतने पर इसकी समीक्षा की जाएगी। तीसरा 2017-2018 से 2019-20 के लिए तीन वर्षीय एक्शन डॉक्यूमेंट था।

प्रथम तीन वर्षीय एक्शन एजेंडा

- नीति आयोग का तीन वर्षीय एक्शन एजेंडा, केन्द्रीय मन्त्रालयों और राज्य सरकारों के साथ व्यापक चर्चा पर आधारित एक दस्तावेज है। नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल, जिसके अध्यक्ष के रूप में प्रधानमन्त्री और कई केन्द्रीय मन्त्रियों और राज्य के मुख्यमन्त्रियों द्वारा सदस्य के रूप में, 23 अप्रैल, 2017 को इसकी बैठक में पहली बार व्यापक रूप से दस्तावेज पर विचार-विमर्श किया गया।
- एक्शन एजेंडा, भारत और उसके लोगों के सर्वांगीण विकास को प्राप्त करने के लिए एक मार्ग प्रस्तावित करता है। अपने सभी आयामों में गरीबी को समाप्त करने के उद्देश्य से प्रत्येक नागरिक को भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, कपड़े, आश्रय, परिवहन और ऊर्जा के न्यूनतम मानक तक पहुँचाना है।
- भारत की लगभग आधी जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न हैं। इसलिए, भारत को समृद्ध बनने हेतु अपने किसानों और कृषि अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाना होगा। इसी बात के समर्थन में प्रधानमन्त्री ने वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का आह्वान किया है।
- आय और जनसंख्या में वृद्धि के साथ सिंचाई, पीने और औद्योगिक उपयोग के लिए पानी की माँग बढ़ रही है। इस विकास को प्राप्त करने के लिए एक्शन एजेंडे के तहत एक मार्ग प्रस्तावित करता है।
- डिजिटल कनेक्टिविटी आर्थिक विकास का एक महत्त्वपूर्ण चालक बन गया है। एक्शन एजेंडा डिजिटल इण्डिया अभियान और डिजिटल कनेक्टिविटी को बढ़ाने से सम्बन्धित कार्यों पर चर्चा करता है।
- एक्शन एजेंडा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य और अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, महिलाओं, बच्चों, अलग-अलग विकलांग और वरिष्ठ नागरिकों जैसे विशिष्ट समूहों का सामना करने वाले मुद्दों को कम करना है।

तीन साल के एजेंडे के तहत पूर्वानुमान

- इस एजेंडे में 2017-18, 2018-19 और 2019-20 के लिए बाजार मूल्य पर जीडीपी क्रमश: ₹ 170.2 लाख करोड़, ₹ 191.1 लाख करोड़ और ₹ 215.9 लाख करोड़ था।
- राजकोषीय घाटे के लक्ष्य 2017-18 के बजट में घोषित राजकोषीय समेकन रोडमैप के आधार पर निर्धारित किए गए थें, जो केन्द्र सरकार को 2017-18 में अपने राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 3.2% तक कम करने और उसके बाद जीडीपी को 3% पर लाने के लिए प्रतिबद्ध था।
- इस एजेंडा में 2017-18, 2018-19 और 2019-20 के लिए व्यय लक्ष्य ₹ 2,182,240 करोड़, ₹ 2,435,256 करोड़ और ₹ 2,793,593 करोड़ निर्धारित था।

राष्ट्रीय विकास परिषद्

- राष्ट्रीय विकास परिषद् (National Development Council, NDC) का गठन कैबिनेट के एक प्रस्ताव द्वारा **6 अगस्त, 1952** को किया गया था। यह भी नीति आयोग की तरह ही एक गैर-संवैधानिक निकाय है। प्रधानमन्त्री इसके भी पदेन अध्यक्ष (Ex-officio Chairman) होते हैं और नीति आयोग का सचिव ही इसका भी मुख्य सचिव होता है।
- प्रारम्भ में राज्यों के मुख्यमन्त्री ही इसके सदस्य होते थे, परन्तु वर्ष 1967 के बाद से केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद् के सभी सदस्य, केन्द्रशासित प्रदेशों के प्रशासक तथा योजना आयोग के सभी सदस्य इसके सदस्य होते हैं। श्री के सन्थानम ने राष्ट्रीय विकास परिषद् को सर्वोच्च **मन्त्रिपरिषद्** (Super Cabinet) की संज्ञा दी।
- राज्यों की भूमिका होने के कारण इसे सहकारी संघवाद का सर्वोत्तम उदाहरण माना जा सकता है। राष्ट्रीय विकास परिषद् स्पष्टत: नीति आयोग से उच्च निकाय है, जिसका लक्ष्य नीति आयोग, केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना है।

राष्ट्रीय विकास परिषद् के उद्देश्य

- *राष्ट्रीय विकास परिषद् के निम्नलिखित उद्देश्य हैं*
  - —संसाधनों को मजबूत तथा एकत्र करना।
  - —योजना के समर्थन में प्रयत्नों को गति देना और इन्हें मजबूत बनाना तथा संसाधनों का इस दृष्टि से उपयोग करना।
  - —सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में समरूप आर्थिक नीतियों के अंगीकरण को प्रोत्साहित करना।
  - —राष्ट्रीय विकास को प्रभावित करने वाली सामाजिक एवं आर्थिक नीतियों की समीक्षा करना।
  - —राष्ट्रीय योजना के संचालन का समय-समय पर पुनर्विलोकन करना।
  - —राष्ट्रीय योजना में निर्धारित लक्ष्य और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपायों की सिफारिश करना।
  - —देश के सभी भागों में सन्तुलित और तीव्र विकास को सुनिश्चित करना।
  - —देश के सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में सामान्य आर्थिक नीतियों को बढ़ावा देना।
  - —योजना आयोग द्वारा निर्मित योजना पर विचार करना तथा उसे अन्तिम रूप प्रदान करना, जिससे योजना संसद में प्रस्तुत हो सके तथा संसद उसका अनुमोदन कर सके और जिससे राष्ट्रीय योजना विकास का एक शासकीय कार्यक्रम बनकर प्रकाशित हो सके।

योजना निर्माण प्रक्रिया

- भारत में योजना निर्माण प्रक्रिया में योजना आयोग, राष्ट्रीय विकास परिषद् (NDC), केन्द्र तथा राज्य सरकारें शामिल होती हैं।
- **प्रथम चरण** में योजना आयोग विभिन्न मन्त्रालयों व राज्य सरकारों से परामर्श करके संसाधनों का आकलन और प्राथमिकताओं का निर्धारण कर इसे राष्ट्रीय विकास परिषद् (NDC) के समक्ष रखता है। NDC द्वारा इसकी समीक्षा और विमर्श के बाद इसे केन्द्र सरकार के पास भेज दिया जाता है।
- **द्वितीय चरण** में केन्द्र व राज्य सरकारें अपनी योजना बनाकर योजना आयोग को भेजती हैं। योजना आयोग विभिन्न विशेषज्ञों एवं राजनीतिक दलों से विचार-विमर्श के बाद इन योजनाओं का एकीकरण करके योजना का प्रारूप (Draft Plan) जारी करता है।

- **तृतीय चरण** में राज्यस्तरीय परियोजनाओं की प्रकृति के निर्धारण हेतु योजना एवं विभिन्न सरकारों के मध्य चर्चा की जाती है। इसके बाद आयोग द्वारा विभिन्न मन्त्रालयों से परामर्श करके योजना का अन्तिम प्रारूप कैबिनेट के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। कैबिनेट के अनुमोदन के पश्चात् इसे अन्तिम अनुमोदन के लिए NDC के पास भेजा जाता है। NDC के अनुमोदन के पश्चात् इस योजना को संसद में पेश किया जाता है। संसद के अनुमोदन के पश्चात् इसे योजना के रूप में प्रकाशित कर दिया जाता है।
  - भारत की पंचवर्षीय योजना सोवियत संघ की नियोजित विकास की अवधारणा से प्रेरित है।
  - योजना आयोग के प्रथम उपाध्यक्ष गुलजारी लाल नन्दा थे।
  - योजना आयोग के अन्तिम उपाध्यक्ष मॉण्टेक सिंह अहलूवालिया थे।

भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ

- राष्ट्रीय आन्दोलन के समय आर्थिक विकास की जो परिकल्पना की जा रही थी, उसमें नियोजन के माध्यम से विकास का लक्ष्य रखा गया था। फलत: स्वतन्त्रता के पश्चात् पंचवर्षीय योजनाओं (Five Year Planning in India) के माध्यम से विकास की नीति अपनाई गई *ये योजनाएँ निम्नलिखित हैं*

पहली पंचवर्षीय योजना (1951-56 ई.)

- यह योजना **हेरड-डोमर संवृद्धि मॉडल** पर आधारित थी और इस योजना में कृषि एवं सिंचाई को प्राथमिकता दी गई। इस योजना के प्रमुख उद्देश्यों में युद्ध एवं विभाजन से उत्पन्न असन्तुलन को दूर करना, खाद्यान्न आत्मनिर्भरता प्राप्त करना, स्फीतिकारक प्रवृत्तियों को रोकना तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों का पुनरुद्धार करना।
- प्रथम योजना में लक्षित विकास दर 2.1% की जगह 3.6% रही। प्रति व्यक्ति आय में भी 1.8% की वृद्धि दर्ज की गई। इसी योजना में भाखड़ा नांगल दामोदर घाटी निगम तथा हीराकुड बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ शुरू की गईं। 2 अक्टूबर, 1952 से 'सामुदायिक विकास कार्यक्रम' प्रारम्भ हुआ।

दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61 ई.)

- दूसरी पंचवर्षीय योजना नेहरू-महालनोबिस मॉडल पर आधारित थी। इस योजना में भारी उद्योगों की स्थापना पर जोर दिया गया। इस योजना के मुख्य उद्देश्यों में समाजवादी समाज की स्थापना, राष्ट्रीय आय में 25% वृद्धि, तीव्र गति से औद्योगीकरण, रोजगार, आय और धन की असमानता को कम करना एवं पूँजी निवेश की दर को 11% करना था।
- इस योजना के दौरान राउरकेला, भिलाई तथा दुर्गापुर में लौह-इस्पात संयन्त्र स्थापित किए गए। साथ ही चितरंजन लोकोमोटिव्स, सिन्दरी उर्वरक कारखाना आदि भी इसी योजना काल के दौरान स्थापित किए गए। इस योजना में बुनियादी तथा पूँजीगत वस्तु उद्योगों के प्रतिस्थापन की दिशा पर निश्चयात्मक बल दिया गया।

तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66 ई.)

- तृतीय योजना स्पष्टत: किसी भी आर्थिक मॉडल पर आधारित नहीं थी, परन्तु इस पर महालनोबिस के चार क्षेत्रीय मॉडल, सुखमय चक्रवर्ती की प्लानिंग मॉडल तथा जे सैण्डी का डेमोंस्ट्रेशन प्लानिंग मॉडल (Demonstration Planning Model), (प्रमुख रूप से चक्रवर्ती मॉडल, जोकि आगत-निर्गत मॉडल पर आधारित है), का प्रभाव देखा जा सकता है।
- इस योजना में कृषि और उद्योग दोनों पर बल दिया गया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर स्वत:स्फूर्त बनाना था।
- वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध, वर्ष 1965 में भारत-पाक युद्ध तथा भीषण सूखे के कारण 2.5% निम्न वृद्धि दर ही प्राप्त की जा सकी, जबकि लक्ष्य 5.6% की वृद्धि (योजना के अन्य प्रमुख उद्देश्य में) का था।
- आधारभूत उद्योगों के विकास की अवहेलना किए बिना कृषि क्षेत्र पर बल देना अवसर की समानता को अधिकाधिक बढ़ाना, जिससे आय की असमानता को कम किया जा सके। देश में रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना, जिससे मानवीय शक्ति का अधिकतम सम्भव सीमा तक प्रयोग किया जा सके।

योजनावकाश (वर्ष 1966-69)

तीसरी पंचवर्षीय योजना की असफलता, भारत-पाक युद्ध के कारण आर्थिक अस्थिरता तथा भीषण सूखे के कारण अगली पंचवर्षीय योजना को विराम दिया गया तथा उसके स्थान पर **1 अप्रैल, 1966** से **31 मार्च, 1969** तक तीन वार्षिक योजनाओं का संचालन किया गया। इस कालावधि में देश के निर्यात में वृद्धि के लिए दूसरी बार रुपये का अवमूल्यन वर्ष 1966 में किया गया, परन्तु निर्यात वस्तुओं की माँग लोच में कमी के कारण अवमूल्यन का भी अनुकूल परिणाम प्राप्त न हो सका, क्योंकि इस अवधि में कोई नियमित नियोजन नहीं किया गया इसलिए इसे 'योजना अवकाश' कहा जाता है।

चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-74 ई.)

- चौथी योजना अशोक रूद्र एवं एल एस मान्ने द्वारा तैयार **ओपन कन्सिसटेण्सी मॉडल** पर आधारित थी, जोकि लियोण्टीफ द्वारा निर्मित आगत-निर्गत मॉडल से प्रेरित तथा उसमें 30 क्षेत्र शामिल किए गए थे। चौथी योजना का मुख्य उद्देश्य स्थायित्व के साथ विकास व आर्थिक आत्मनिर्भरता की प्राप्ति था तथा इसमें समाजवादी समाज की स्थापना को भी विशेष रूप से लक्षित किया गया था।
- इस योजना के अन्य उद्देश्यों में राष्ट्रीय आय व रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना, आय व सम्पत्ति वितरण तथा क्षेत्रीय असमानता को दूर करना और आधारभूत एवं भारी उद्योगों पर विशेष बल देते हुए तीव्र गति से औद्योगिक विकास करना था। इस योजना में सर्वाधिक महत्त्व कृषि एवं सम्बन्ध क्षेत्र को देते हुए इसे 24.8% राशि (कुल राशि का) आवण्टित की गई। **गॉडगिल रणनीति** का सम्बन्ध इसी योजना से है। इस योजना में विकास दर लक्ष्य 5.7% रखा गया, जबकि वास्तविक प्राप्ति केवल 2.1% ही रही। राष्ट्रीय आय में भी केवल 1.1% की वृद्धि दर्ज की गई। इस योजना में सम्पत्ति तथा आर्थिक शक्ति के बढ़ते संकेन्द्रण की पूर्व प्रवृत्ति के सुधार का उद्देश्य अपनाया गया।
- इसी योजनावधि में 14 वाणिज्यिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण, Monopolistic and Restrictive Trade Practice (MRTP) आयोग की स्थापना की गई एवं रोजगार गारण्टी योजना (Education Guarantee Scheme, EGS) को प्रारम्भ किया गया।